सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 • अंक 11 • 5 फरवरी 2020 • मूल्य : 20 रु.

सिवाडा में
उपाध्याय से
आचार्य
पद पर आरुढ हुए
श्री जिन
मनोज्ञसूरिजी म.

सिवाडा में उपाध्याय से आचार्य पद पर आरुढ हुए **श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.**

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

अहिसं सच्चं व अतेणयं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च।
पडिवज्जिया पंच महव्वयाइं, चरेज्ज धम्मं जिणदेसियं विदू।।

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह-इन पांच महाव्रतों को अपना कर विद्वान मुनि जिनेश्वर कथित धर्म का आचरण करें।

A learned monk having adopted the five great vows of non-violence, truthfulness, non-stealing, celibacy and non-possessivenss should practise the religion preached by the jineshwara.

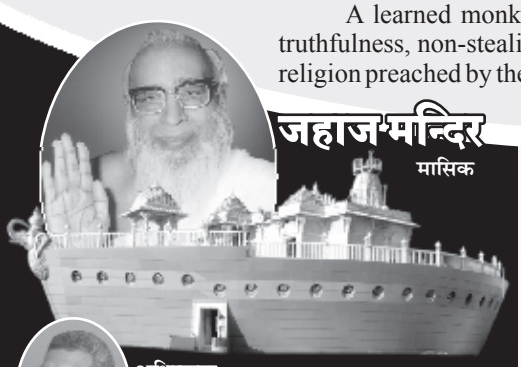

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 16 अंक : 11 5 फरवरी 2020 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट

जहाज मन्दिर

माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)

फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451

E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in

www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	गुडूर	05
3. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	06
4. गौत्र का इतिहास	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. खरतरगच्छ का जैन जगत को योगदान	चाँदमल सिपाणी	09
6. अधूरा सपना	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	11
7. समाचार दर्शन	संकलित	14
8. जिज्ञासा	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	28
9. संरक्षक		30
10. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	34

विशेष दिवस

06 फरवरी पुष्य नक्षत्र प्रारंभ रात्रि 23.59 ।

08 फरवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण, जहाज मंदिर वर्षगांठ, धोलका दादावाडी वर्षगांठ, पुष्य नक्षत्र समाप्त रात्रि 22.04 ।

16 फरवरी खेतासर में प्रतिष्ठा ।

22 फरवरी पाक्षिक प्रतिक्रमण ।

23 फरवरी दादा जिनकुशलसूरि 687वीं पुण्यतिथि, देराउर, मालपुरा व बरमसर मेला ।

28 फरवरी बाडमेर हाला संघ में प्रतिष्ठा ।

28 फरवरी आचार्य श्री जिनकवीन्द्रसागरसूरिजी म. पुण्यतिथि, बूढा ।

01 मार्च चौमासी अठाई प्रारंभ ।

03 मार्च रोहिणी ।

नवप्रभात

मैं स्वाध्याय कर रहा था। श्रीमद् देवचन्द्रजी महाराज द्वारा रचित चौवीशी मेरे हाथ में थी। पहले स्तवन की प्रथम पंक्ति को गुनगुना रहा था।

मैं उस पंक्ति की भक्ति-धारा में डुबकी लगा रहा था। वह प्रथम पंक्ति मेरे विचारों में गहराई से उतर गई थी। उस पंक्ति में आये 'प्रीतडी' शब्द ने मुझे अपनी आंखें बंद कर चिंतन करने को मजबूर किया था।

मैं इस शब्द पर गहराई से सोचने लगा। आंखें बंद कर दी। पुस्तक सिमट गई। एकान्त वातावरण ने मेरी सोच को गति दी।

सोचने लगा- प्रीत शब्द दुनिया का सबसे परिचित शब्द है। दुनिया में जीने वाला हर व्यक्ति अपने जीवन में प्रेम का अनुभव करता ही है।

पर प्रेम की सही व्याख्या क्या है?

मति ने उत्तर दिया- क्या प्रेम की व्याख्या की जा सकती है? प्रेम का तो अनुभव होता है।

प्रश्न हुआ- प्रेम है क्या! कैसे समझना कि प्रेम है! केवल शब्दों के प्रयोग से अर्थ सिद्ध नहीं होगा।

मन विश्लेषण करने लगा- परमात्मा से प्रेम की बात तो अलग होगी क्योंकि वह तो एकतरफा होगा। उसमें तो समर्पण की धारा होगी। बल्कि यों कहना चाहिये कि समर्पण ही प्रेम है।

पर संसार में जिसे हम प्रेम कहते हैं, उसकी परिभाषा क्या हो सकती है!

मन ने उत्तर दिया- दो वाक्यों द्वारा प्रेम का अर्थ समझा जा सकता है।

1. जिस व्यक्ति से आप प्रेम करते हैं, उस व्यक्ति के द्वारा कोई गलती हो जाये, तब भी आपका प्रेम जरा भी कम नहीं हो, तो समझना चाहिये कि आप प्रेम करते हैं।

2. वह व्यक्ति आपकी गलती निकाले, तब भी आपके हृदय का उसके प्रति प्रेम कम न हो, उसे प्रसन्नता से स्वीकार करें, तो समझना चाहिये कि आप प्रेम करते हैं।

यह व्याख्या यदि आचरण का आधार बनती है तो जीवन की समस्याओं का समापन हो सकता है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 5

गुम्मीलेरु तीर्थ

-मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
- साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

गुम्मीलेरु तीर्थ के अधिपति मूलनायक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ प्रभु की श्यामवर्ण प्रतिमा गुम्मीलेरु ग्राम में नहर खोदते वक्त भूगर्भ से प्रकट हुई थी। संवत् 2030, वैशाख सुद सातम, रविवार 28 अप्रैल, 1974 को प्रतिमा जी की स्थापना एक छोटा सा गंभारा बनवाकर बड़े ही धूमधाम से की गई थी। फिर परमात्मा के अतिशय से आजू-बाजू के जैन संघों ने मिलकर संगमरमर के श्वेत पाषाण से शिखरबद्ध जिनालय बनवाया और संवत् 2062 जेठ सुदि 4 बुधवार 31 मई, 2006 को अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

यह तीर्थ विशाखापट्टनम से चैन्नई जाने वाले नेशनल हाइवे रोड पर अवस्थित है। यहाँ पर दादा साहेब श्री जिनकुशलसूरि जी की प्रतिमा विराजमान है। दादा साहेब की प्रतिमा जी 25 इंच की है। मंदिर में पीछे रायण वृक्ष के नीचे आदीश्वर भगवान की प्रतिमा जी एवं भगवान के पगलिये प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ अक्षय तृतीया के पारणे भी होते हैं। साल में छह उत्सव मनाये जाते हैं। यहाँ पर सर्व सुविधायुक्त दो विशाल धर्मशालाएँ एवं विशाल भोजनशाला विद्यमान है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली हैं। इस तीर्थ के अधिष्ठायक देव जागृत हैं, जो भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। यहाँ पर नागराज समय-समय पर भक्तों को दर्शन देते हैं।

यह तीर्थ दिनों दिन प्रगति के शिखर पर है।

पता : श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन तीर्थ

पोस्ट-गुम्मीलेरु, वाया मंदापेटा, जिला - पूर्वी गोदावारी (आ.प्र.)

दूरभाष - 08855 - 234037, 203060

प्रतिध्वनि

卐 पहिचान से मिला हुआ काम थोड़े वक्त के लिए रहता है, लेकिन काम से मिली हुई पहिचान उम्र भर के लिए रहती है।

卐 यदि आप हार मान लेते हैं तो दुनिया की कोई ताकत जीता नहीं सकती हैं। इसलिए कहा भी गया हैं- मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।

卐 फर्क इससे नहीं पड़ता कि लोग आपके बारे में क्या सोचते है?फर्क तो इससे पड़ता है कि आप अपने बारे में क्या सोचते है?

सोलह सतियाँ
कथानक
14

विलक्षण वैराग्यवती सती द्रौपदी

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गतांक से आगे...

पाण्डव हस्तिनापुर की ओर बढ़ते हुए सोचने लगे-वास्तव में छोटी सी त्रुटि किस प्रकार प्राणलेवा बन जाती है। पाण्डवों के हस्तिनापुर पहुँचने पर कुन्ती को जब सारी बात ज्ञात हुई, तब उनकी गलती से वे अत्यन्त पीड़ित हुई। अन्ततोगत्वा कुन्ती की प्रार्थना को मान देकर श्रीकृष्ण ने दक्षिण समुद्री तट पर पाण्डवों को बसेरा बसाने की आज्ञा प्रदान की।

कृतज्ञ भावों को हृदय में बसाकर पाँचों पाण्डव माँ कुन्ती और द्रौपदी के साथ उस दिशा में प्रस्थित हो गये। गाँवों की गलियों को पार करते हुए वे लक्ष्य के प्रति समर्पित रहे। कभी कभी गुफाएँ, पर्वत, जंगल और खण्डहर भी उनके आश्रय स्थल बनते गये।

कभी सांप के आने की सरसराहट.....जंगली प्राणियों की प्राणलेवा चीत्कार सुन द्रौपदी घण्टों तक जागती रहती। कभी उसकी रूह कांप उठती तो कभी धरती कंपित होती प्रतीत होती। श्वासों के धागे टूटते-से लगते कि फिर पंचपरमेष्ठी की दिव्य शरण उसे भयमुक्त कर देती। कभी चत्तारि मंगलम् का ध्यान धरती तो कभी नमस्कार मंत्र की आराधना में एकाकार हो जाती। ध्यान से बाहर आकर जब कभी कर्मों की विचित्रता पर दृष्टिपात करती तो समझ में नहीं आता कि खुद की किस्मत पर रोना चाहिये या हँसना? सोचती सोचती अतीत के कितने ही पन्नों को खोल कर पढ़ने लग जाती।

....पिताश्री द्रुपद का महल....। वात्सल्य की चौखट....। उसी नगरी में एक बार महामुनि पधारे। वे असाधारण ज्ञान के धनी थे। मैं उनकी पर्युपासना के लिये उपस्थित हुई। अमृत-प्रवचन के उपरान्त मेरी जिज्ञासा को समाहित करते हुए मेरे पूर्वजन्मों के एक-एक पृष्ठ को खोलकर पढने लगे-द्रौपदी! अनेक भवों पहले तूं नागश्री नामक ब्राह्मणी थी। तुम्हारे पति सोम भ्रातात्रय में मध्यवर्ती थे। सामूहिक जीवन शैली! तुम सबकी घरेलू काम के लिये क्रमशः नियुक्ति होती थी। कार्यकुशलता के द्वारा तेरे मन में यश बटोरने की कांक्षा नाचती रहती थी। पाककला में अपना चातुर्य प्रदर्शित करने के लिये तूंने एक दिन विशिष्ट व्यंजन तैयार किये। बाकी सब बराबर था पर शाक का लघु टुकड़ा अपने मुख में रखा कि तुम्हारा मुख कड़वाहट से भर गया। थूं...थूं...करती हुई तूंने उसी पल बाहर थूंक दिया। तूं समझ गयी-ओह! यह तो कड़वी तुम्बी है। जहर भरा हुआ है इसमें।

चतुरता से तूंने शीघ्र ही दूसरा शाक बना लिया पर उस सब्जी को कहाँ फैंकना, यह प्रश्न मन में चल रहा था। संयोग से उसी समय 'धर्मलाभ' के मंगल आशीर्वाद के साथ मुनीन्द्र धर्मरूचि अणगार का तुम्हारे घर में भिक्षाचर्या के दौरान आना हुआ। वे मुनि मासक्षमण के तपस्वी थे।

इष्ट-अनिष्ट का तनिक भी विचार किये बिना तूं जहरीली सब्जी मुनिश्री के पात्र में डालने लगी। तुझे तो सब्जी का समापन करना था इसलिये मुनीन्द्र के मना करते-करते भी तूंने सारी सब्जी भिक्षापात्र में खाली कर दी।

द्रौपदी का मन दर्द से भर उठा-ओह! मैंने ये कैसा अनर्थकारी कार्य कर लिया, तभी उसके कर्णपटल से केवलज्ञानी भगवंत के शब्द टकराये-आहार उदरस्थ करने से पूर्व मुनिवर जब अपने गुरु महाराज के उपपात में पहुँचे, तब ज्ञानी गुरुदेव ज्ञान से जान गये कि यह आहार ग्राह्य नहीं है। उन्होंने आदेश दिया कि इस आहार को निरवद्य भूमि में परठ आओ।

द्रौपदी के हृदय की उत्सुकता बढ़ गयी। श्वास को संतुलित करके केवली प्रभु पुनः मुखर हुए-द्रौपदी! उन मुनीन्द्र की समता को तो देखो कि जब गुर्वाज्ञा धारण कर वे जंगल में आहार परठने के लिये पहुँचे, तब शाक की एक बूंद भूमि पर गिरी। परिणाम स्पष्ट था । उसकी गंध से चींटियों का रैला उस ओर आने लगा और बिच्छु के तीक्ष्ण दंश से भी खतरनाक जहरीला स्पर्श पाकर मृत्यु की गोद में समाने लगा।

देखते-देखते कुछ ही पलों में सैंकड़ों चींटियाँ शाक की एक बूंद की बलि चढ़ गयी।

करूणासागर मुनि यह दृश्य भला कैसे देख पाते।

ओह....! जीवों का भयंकर विनाश! महाहिंसा को आमन्त्रण! दुष्ट कर्मों का बंधन और विस्तृत जन्म-मरण की अनिष्ट परम्परा सर्जन!

गुर्वाज्ञा पुनः उनके स्मृति-पथ पर विचरण करने लगी-ओह! गुरुदेव ने कहा था-ऐसे स्थान पर परठना, जो निरवद्य हो, जहाँ किसी प्राण, भूत, जीव और सत्त्व की हिंसा न हो। यहाँ तो मुझे कोई भी निरवद्य स्थान नजर में नहीं आ रहा। मेरा उदर ही मुझे निरवद्य लगता है।

क्षमाश्रमण मुनीन्द्र धर्मरूचि अणगार ने वह सारी जहरीली उदरस्थ कर ली। विष ने तपोपूत शरीर पर ऐसा प्रभाव दिखाया कि महामुनि की तेजस्वी आत्मा कुछ ही पलों में अगले पड़ाव की ओर प्रस्थान कर गयी।

भंते! जरूर इस अनिष्ट प्रवृत्ति का दुष्फल मुझे भोगना पड़ा होगा। अनायास ही द्रौपदी के मुख से शब्द निकल पड़े।

हाँ द्रौपदी! कर्मों का भुगतान हर आत्मा को करना ही होता है। मुनि के देहावसान की घटना हवा की तरह पूरे नगर में फैल गयी। सभी लोग नागश्री को धिक्कारने लगे। इससे भी अधिक कास, योनिशूल आदि सोलह रोगों ने उसकी काया को छलनी-छलनी कर दिया। आर्त्त-रौद्र ध्यान में उसने शरीर को त्यागा और उसकी छोटी सी चालाकी उसे छट्ठी नरक तक खींचकर ले गयी। वहाँ के घोर-कठोर कष्टों सहने के पश्चात् भी नागश्री तिर्यंच योनि में अनेक भवों तक चक्कर काटती रही। जब कर्मों का जोर थोड़ा कम हुआ, तब उसने एक श्रेष्ठी के घर में कन्या के रूप में जन्म लिया। उसका वर्ण सुन्दर, सुकुमार और सौम्य था अतः गुणोपेत नाम दिया गया-सुकुमालिका!

बचपन के सोपानों को पार सुकुमालिका यौवन के कक्ष में प्रविष्ट हुई। उसका छरहरा बदन....अर्द्धचन्द्राकार अधर युगल....। अंग अंग से टपकते सौन्दर्य में गजब का आकर्षण था। परिणय के उपरान्त जब मिलन की प्रथम रजनी में श्रेष्ठी पुत्र सुकुमालिका का स्पर्श करने को आतुर हुआ कि उसके शरीर से विद्युत् तरंगें प्रवाहित होने लगी। ऐसे में भला उसके स्नेह-पाश में वह कैसे बंधता! परिणाम यह आया कि कितने ही श्रेष्ठीपुत्रों ने सुकुमालिका ने अपनाना चाहा पर सफल नहीं हो पाये। यह बात माता-पिता के लिये चिन्ताजनक थी तो तेरे लिये भी कोई कम घातक नहीं थी।

एक ओर यौवन का उन्माद, दूसरी ओर विकट विद्युत् तरंगें। काम लिप्सा में लिप्त सुकुमालिका ने एक भिखारी को बहुत सारा धन देकर विवाह करने के लिये राजी कर लिया पर वह भी पहली रात में भाग निकला।

द्रौपदी! सुकुमालिका के भव में तुम्हारी व्यथा का कोई पार नहीं था। व्यर्थ जाते यौवन की चिंता ने तुझे रूग्ण बना दिया।

एक बार उपाश्रयस्थ साध्वियों के उपपात में पहुँचकर तूंने मनोव्यथा प्रकट की। संवेगी श्रमणी वर्ग की संचालिका साध्वी गोपालिका ने कहा-हम पुरूषवशीकरण का कोई मंत्र-तन्त्र नहीं जानती पर इन्द्रियों व मन को वश में करने का मन्त्र जरूर जानती हैं। वैराग्य सभर वाणी सुनकर तूं उनकी निश्रा में संयम साधना के राजमार्ग पर चल पड़ी। जप, तप और वेयावच्च के विविध संकल्पों को स्वीकार करके कषायों को मंद करने लगी। एक दिन ऐसा हुआ कि तेरे मन में आतापना लेने की आकांक्षा ने जन्म लिया। पूजनीया गुरूवर्या के चरणों में जाकर तूं निवेदन करने लगी-पूज्ये ! यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं सुभूमि उद्यान के निकट बेले-बेले के तप से शरीर-संपदा का सदुपयोग करती हुई सूर्य की आतापना लेना चाहती हूँ। आतापना परीषह में खुद को तपाकर कर्म-ईंधन को तपाग्नि में भस्मीभूत करना चाहती हूँ। तदर्थ आपकी अनुमति आवश्यक है। गुरुवर्या ने कहा-साध्वी सुकुमालिके! उपाश्रय से बाहर श्रमणी के लिये आतापना लेने का जिनाज्ञा में प्रावधान नहीं है। अन्य साध्वियों के साथ रहकर उपाश्रय के अन्दर ही वस्त्रावृत्त शरीर से सूर्य की आतापना लेना कल्पता है । यह कहकर उन्होंने कर्म निर्जरा के अनेक वैकल्पिक मार्ग सुझाये पर तूंने अपना हठाग्रह नहीं छोड़ा। आखिर साध्वी संघ का त्याग करके मनमाना आचरण करने लगी। सुभूमि उद्यान के आसपास तपपूर्वक आतापना लेने लगी।

एक बार तूं आतापना ले रही थी। बंद नयन! ध्यान में रमा मन! तूं गहराईयों में उतरती, उससे पहले तेरे कानों में काम-कथा के शब्द पड़ने लगे। कुछ ही पलों में तेरा मन इतना उत्तेजित हो गया कि बंद आँखें खोलकर तूं यत्र-तत्र-सर्वत्र देखने लगी। अचानक तेरी दृष्टि शून्यगृह पर जा टिकी। तूंने देखा कि एक दत्ता नाम की वेश्या पाँच पुरुषों के साथ कामभोग कर रही है।

अब तो तेरा मन बुरी तरह हिल गया। तूं मनोगुप्ति का त्याग करके सोचने लगी-ओह! यह नारी कितनी पुण्यशालिनी है, जो पाँच-पाँच पुरुषों के साथ काम भोगों का आनंद मना रही है और एक मैं अभागिनी हूँ, जिसे एक भी पुरुष का योग नहीं मिला।

(शेष पृष्ठ 10 पर)

गोत्र का इतिहास
22

आघरिया गोत्र का इतिहास

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

आघरिया गोत्र का संबंध भाटी राजपूतों से है। सिंध देश में अग्ररोहा नाम का नगर था। उस नगर पर गोसलसिंह भाटी राजपूत राज्य करता था।

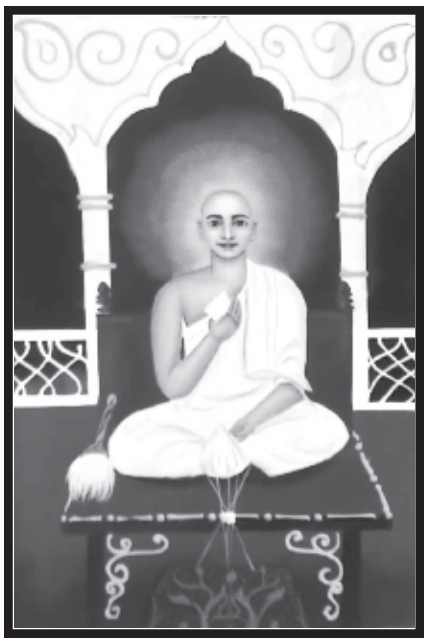

वि. सं. 1214 चल रहा था। प्रथम दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि का स्वर्गवास हो चुका था। उनके पट्ट पर मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्रसूरि बिराजमान थे।

वे विहार करते हुए अग्ररोहा नगर पधारे। उस समय उस राज्य पर यवन सेना का आक्रमण हुआ था। राजा गोसलसिंह भाटी को उन्होंने कैद कर दिया था।

तब राजा के प्रधान घुरसामल अग्रवाल ने बहुत सावधानी से मणिधारी दादा जिनचन्द्रसूरि के पास पहुँचा। उनसे निवेदन किया- भगवन्! कैसे भी करके राजा को छुडाना है।

गुरुदेव ने कहा- यदि राजा हिंसा का त्याग करे.. . जैन धर्म स्वीकार करे... नवकार का जाप करे... तो यह चमत्कार संभव है।

उसने कहा- गुरुदेव! आपका आदेश शिरोधार्य होगा।

गुरुदेव के जाप का ऐसा अद्‌भुत चमत्कार रहा कि राजा गोसलसिंह की बेडियाँ अपने आप टूट गई। यवन सेना के सेनापति यह देखकर चमत्कृत हुआ। उसने दूसरी नई मजबूत बेडियाँ डाली।

पर दूसरे ही पल वे बेडियाँ भी टूट गई।

ऐसा सात बार हुआ। तब वह अचरज से भरकर पूछने लगा- राजन्! यह क्या चमत्कार है।

राजा गोसलसिंह भाटी ने कहा- मैं नहीं जानता।

सेनापति शमशेरखां ने विचार किया- यह सामान्य घटना नहीं है। अवश्य ही इसके पीछे किसी महापुरुष का हाथ होना चाहिये।

उसने तत्काल राजा गोसलसिंह को मुक्त कर दिया।

राजा मुक्त होकर अपने घर गया। प्रधान घुरसामल ने कहा- राजन्! यह सब गुरुदेव मणिधारी जिनचन्द्रसूरि की ही कृपा का परिणाम है।

राजा सपरिवार गुरुदेव के पास पहुँचा। राजा ने गुरुदेव से धर्म का श्रवण किया। श्रद्धा से भर कर उसने जिनधर्म स्वीकार कर लिया।

अग्ररोहा शहर की यह घटना होने से उन्हें गोत्र दिया- आग्रहिया! कालांतर में यही गोत्र आग्रहिया आघरिया/आगरिया नाम से प्रसिद्ध हुआ।

प्रतिध्वनि

卐 चेहरे किसी क्रीम पाउडर से नहीं बल्कि अपनी काबिलियत से चमकते हैं।

卐 बड़ा आदमी बनना एक अच्छी बात है। पर एक अच्छा आदमी बनना बहुत बड़ी बात है।

खरतरगच्छ सहस्राब्दी गौरव वर्ष आलेख

खरतरगच्छ का जैन जगत को योगदान

—चाँदमल सिपाणी

महाराज दुर्लभराज को राजसभा में आचार्य वर्धमान सूरिजी और श्री जिनेश्वरसूरिजी का चैत्यवासियों के साथ शास्त्रार्थ हुआ। चैत्यवासी इस शास्त्रार्थ में पराजित हुए और श्री दुर्लभराज ने उन्हें 'खरतर' की उपाधि से विभूषित किया। तब से अर्थात् संवत् १०७० के लगभग पाटण में खरतरगच्छ का नामकरण हुआ। वर्तमान श्वेताम्बर गच्छों में यह सब से पुराना है। श्री जिनेश्वरसूरिजी से श्री जिनपतिसूरिजी तक प्रायः सब ही आचार्यों ने चैत्यवास का विरोध कर सुविहित मार्ग का प्रचार किया। यह खरतरगच्छ की सबसे बड़ी सेवा जैन जगत् को है। स्व० मुनि जिनविजयजी ने श्री जिनेश्वरसूरिजी के प्रभाव के बारे में लिखा है कि- "श्री जिनेश्वरसूरि के प्रबल पांडित्य और प्रकृष्ट चरित्र का प्रभाव न केवल उनके शिष्य समूह में ही प्रचारित हुआ अपितु तत्कालीन अन्यान्य गच्छ एवं यति समुदाय के भी व्यक्तियों ने इनके अनुकरण में क्रियोद्धार और ज्ञानोपासना आदि की विशिष्ट प्रवृत्ति का बड़े उत्साह के साथ उत्तम अनुसरण किया।

जिनेश्वरसूरिजी के जीवन कार्य ने उस युग-परिवर्तन को सुनिश्चित स्वरूप दिया। तब से लेकर ६०० वर्षों में पश्चिम भारत में जैन-धर्म का जो साम्प्रदायिक और सामाजिक स्वरूप का प्रवाह प्रचलित रहा, उसके मूल में जिनेश्वरसूरिजी का जीवन सबसे अधिक एवं विशेष प्रभाव रखता है।"

खरतरगच्छ में बड़े प्रभावशाली आचार्य हुए जैसे- श्री जिनचंद्रसूरिजी, श्री अभयदेवसूरिजी (नवांगी टीकाकार), श्री जिनदत्तसूरिजी, श्री जिनकुशलसूरिजी, श्री जिनप्रभसूरिजी, श्री जिनभद्रसूरिजी, योगी आनंदघनजी, श्रीमद् देवचन्द्रजी, श्री चिदानन्दजी आदि। इस प्रकार कई प्रतिभाशाली यति भी हुए हैं। इन सब ही आचार्यों ने विशाल ग्रन्थों की रचना कर जैन साहित्य को समृद्धिशाली बनाया। स्व० श्री जिनविजयजी लिखते हैं कि- 'खरतरगच्छ में अनेक बड़े-बड़े प्रभावशाली आचार्य, बड़े-बड़े विद्यानिधि उपाध्याय, बड़े-बड़े प्रतिभाशाली पंडित मुनि और बड़े-बड़े यांत्रिक, तांत्रिक, ज्योतिर्विद, वैद्यक, विशारद और कर्मठ यति हुए जिन्होंने अपने समाज की उन्नति, प्रगति और प्रतिष्ठा के बढ़ाने में बड़ा योग दिया है। सामाजिक और साम्प्रदायिक उत्कर्ष के सिवाय अनुयायियों ने संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश भाषा के साहित्य को भी समृद्ध करने में असाधारण उद्यम किया और इसके फलस्वरूप आज हमें भाषा, साहित्य, इतिहास, दर्शन, ज्योतिष, वैद्यक आदि विविध विषयों का निरूपण करने वाली छोटी-बड़ी सैकड़ों-हजारों ग्रन्थ कृतियाँ जैन भण्डारों में उपलब्ध हो रही हैं। खरतरगच्छीय विद्वानों की यह उपासना न केवल जैन धर्म की दृष्टि से ही महत्त्वपूर्ण है, अपितु समग्र भारतीय संस्कृति के गौरव की दृष्टि से भी उतनी ही महत्ता रखती है। व्याकरण, काव्य, कोष, छन्द, अलंकार, नाटक, ज्योतिष, वैद्यक और दर्शन शास्त्र के अगणित जैन ग्रन्थों पर उन्होंने अपनी पाण्डित्यपूर्ण टीकाएँ आदि रचकर तत्तद ग्रन्थों और विषयों के अध्ययन कार्य में बड़ा उपयुक्त साहित्य तैयार किया है।' इन आचार्यों के प्राकृत, संस्कृत आदि साहित्य सेवा के सम्बन्ध में 'राजस्थान का जैन साहित्य' नामक पुस्तक के लेखों व ग्रन्थ सूची से पूर्णतया स्पष्ट ज्ञान होता है। साहित्य निर्माण में योगदान के साथ-साथ खरतरगच्छ के आचार्यों, यतियों व श्रावकों ने कई जगह ज्ञान भण्डार भी स्थापित किए। इनमें श्री जिनभद्रसूरि द्वारा स्थापित जैसलमेर का ज्ञानभंडार तो आज अपने आप में अनूठा व ऐतिहासिक दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखता है। इसके अलावा जैसलमेर के

यतियों, उपाश्रयों व थाहरूशाह के ज्ञानभण्डार भी महत्त्वपूर्ण हैं। इसी प्रकार बीकानेर आदि में भी ज्ञान भण्डार स्थापित हुए। साहित्य निर्माण तथा ज्ञानभण्डारों की स्थापना के अतिरिक्त खरतरगच्छ के आचार्यों व यतियों ने कई मंदिर, मूर्तियों व जैन तीर्थों के निर्माण व प्राचीन मंदिरों के जिर्णोद्धार में बड़ा योगदान दिया है।

सहस्राब्दी समारोह प्रारंभ सन् 2021 मालपुरा तीर्थ

इन आचार्यों द्वारा निर्मित मंदिर, मूर्तियाँ आज भी विपुल मात्रा में उपलब्ध हैं। जैसलमेर, बीकानेर आदि स्थानों में खरतरगच्छ के श्रावकों ने मन्दिरों का निर्माण कराया व इन आचार्यों द्वारा इनकी प्रतिष्ठाएँ हुई हैं। कापरड़ा, शत्रुंजय, गिरनार, राणकपुर, सिरोही आदि कई स्थानों पर खरतरगच्छ के मन्दिर है। इन सब ही कार्यकलापों के द्वारा सरस्वती की उपासना के साथ-साथ स्थापत्य कला, मूर्तिकला, चित्रकला का भी जो संवर्धन और रक्षण खरतरगच्छ के आचार्यों ने किया वह आज भी प्रत्यक्ष है।

खरतरगच्छ का प्रभाव बड़ा विस्तृत रहा है। राजस्थान के अलावा मध्यप्रदेश, बंगाल, आसाम, गुजरात, दक्षिण भारत में भी इस गच्छ के श्रावकों का निवास है। इतना अवश्य है कि स्थानकवासी, तेरापंथी के प्रचार-प्रसार के कारण बहुत से श्रावक इनके अनुयायी हो गये। और कहीं-कहीं तपागच्छ के प्रभाव से उनकी क्रियायें करने लग गये। फिर भी खरतरगच्छ का प्रभुत्व व प्रभाव आज भी परिलक्षित होता है। स्व० मुनि जिनविजयजी ने भी कहा है कि- 'श्वेताम्बर जैन संघ जिस स्वरूप में आज विद्यमान है, उस स्वरूप के निर्माण में खरतरगच्छ के आचार्य, यति और श्रावक समूह का बहुत बड़ा हिस्सा है। एक तपागच्छ को छोड़कर दूसरा और कोई गच्छ इसके गौरव की बराबरी नहीं कर सकता। कई बातों से तो तपागच्छ से भी इस गच्छ का प्रभाव विशेष गौरवान्वित है। भारत के प्राचीन गौरव को अक्षुण्ण रखने वाली राजपूताने की वीर भूमि का पिछले एक हजार वर्ष का इतिहास, ओसवाल जाति के शौर्य, औदार्य, बुद्धि-चातुर्य और वाणिज्य-व्यवसाय-कौशल आदि महद् गुणों से प्रदीप्त है और उन गुणों का जो विकास इन जाति में इस प्रकार हुआ है वह मुख्यतया खरतरगच्छ के प्रभावान्वित मूल पुरुषों के सदुपदेश तथा शुभाशीर्वाद का फल है।'

खरतरगच्छ की पट्टावलियाँ, प्रशस्तियां, शिलालेख, विज्ञप्तियां, ऐतिहासिक रास आदि इतने इधर-उधर बिखरे पड़े हैं कि उन्हें संग्रहित किया जाए तो उनसे विस्तृत और व्यवस्थित कई ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं। यदि ऐसा सम्भव हुआ तो अतीत के कई ऐतिहासिक तथ्य प्रकाश में आ सकते हैं और जिससे जैन समाज और अधिक गौरवान्वित होगा। आवश्यकता है इस ओर ध्यान देकर कार्य करने की।

['तित्थयर' मार्च १९८२ से साभार]

❋

(शेष पृष्ठ 06 का)

सती द्रौपदी

इन भावों के प्रवाह में तूं (सुकुमालिका) बही तो ऐसी बही कि अपना आचार-विचार भूला बैठी। और इसी भूल में तूं निदान कर बैठी, भोगरूपी कोयले पाने के लिये तूं चन्दनमय तप का वृक्ष जला बैठी-यदि मेरी तपाराधना.... आतापना....उपासना....साधना का कोई फल है तो अगले भव में मैं पाँच पतियों की प्रिया बनूं। द्रौपदी! तूंने अक्षय सुख देने वाले तप का सौदा नश्वर भोगों से कर लिया।

अतीत के पृष्ठों को खोलती, पढती, पलटती हुई द्रौपदी सुखद समीर के शीतल स्पर्श को पाकर निद्राधीन हो गयी।

प्रभात की उजली किरणें आगे बढने-चलने का निर्देश दे रही थी। द्रौपदी की यात्रा वहाँ तक चलती रही, जहाँ तक सच्चा हीरा प्राप्त न हो जाये। मथुरा संयम महोत्सव की पावन भूमि बन गयी। संयम साधना से कर्मों को खपाकर कषायों को मंद करती हुई द्रौपदी सुरलोक की छाँव में पहुँची।

❋

धारावाहिक
कथा
13

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवराज युवरानी को शीघ्र आने का वचन देकर अपनी योजना को अंतिम रूप देने के लिए उसी अंधेरी कोठरी में पहुंच गये। जहाँ उनके साथी उनके इंतजार में बैचेन हो रहे थे।

युवराज ने आते ही कहा- मुझे जल्दी लौटना है। अत: हम कल नगर सेठ के घर चोरी करने की योजना को अंतिम रूप से विश्लेषित कर लेते हैं ताकि कोई हल्की सी भी त्रुटि न रहे। एक साथी ने तुरंत कहा- पर युवराज आज आप जल्दी क्यों जाना चाहते हैं। आपकी प्रिय नर्तकी कब से आपके बारे में पूछ रही है। कुछ समय के लिए वहाँ भी चले।

युवराज ने तुरंत कहा- नहीं.....नहीं.....। मेरा अब कहीं भी जाने का मन नहीं है। युवरानी की निर्मल चेतना को आहत करता रहा पर अब ऐसा नहीं होगा। युवराज की बात सुनते ही साथियों के कान खड़े हो गये। उन्होंने सोचा- हमारा मूल्य इनकी आँखों के बंद रहने तक ही है। अगर इनकी आँखों से विलासिता का चश्मा उतर गया तो हमारा क्या होगा? नहीं...। इन्हें तो हमारी दुनिया में ही रखने में भलाई है। पर अभी कुछ कहने की अपेक्षा समय का इंतजार करना चाहिए।

युवराज ने कहा- एक बार पुन: हम नगर सेठ के घर का निरीक्षण करके किस समय और कैसे हमें घर में प्रवेश करना है, यह समझ लेते हैं। एक साथी ने कहा- लगभग पूरी रात उसी गली के इर्दगिर्द चोरी चुपके चक्कर लगाकर वस्तुस्थिति समझकर आया हूँ। चौकीदार कितनी बार चक्कर लगाता है! किस समय हमें सेठजी के घर में प्रवेश करना चाहिए! आदि सब अच्छी तरह समझ लिया है। हम ठीक रात्रि को दो बजे यहाँ से चलेंगे। आप ठीक 2 बजे पहुंच जाना।

युवराज ने वस्तुस्थिति समझकर साथियों से विदायी ली और निर्धारित समय से कुछ पहले ही युवरानी के समक्ष उपस्थित हो गया।

युवरानी आज परम प्रसन्न थी। वह आश्वस्त हो गयी थी कि युवराज को वह अतिशीघ्र कुल मर्यादा के अनुसार जीते हुए देख लेगी। वह शालीन वेशभूषा में सुसज्ज होकर दर्पण में अपना प्रतिबिम्ब देख रही थी कि कहीं उसके शृंगार में कोई न्यूनता तो नहीं रही है। युवराज जाते हुए उसे आदेश दे गये थे कि आज आने के बाद वे उपवन में घूमने जायेंगे और वहाँ के प्राकृतिक सौन्दर्य के बीच ही वे रात्रि विश्राम करेंगे।

युवरानी तो युवराज की मीठी बातों में अतीत का सारा ग़मम भूल गयी। उसे लगा जैसे वह इस धरती की सर्वाधिक भाग्यशाली नारी है जिसे ऐसा सुखी संसार मिला है।

सुहागरात्रि को तो वह सहेलियों के हाथों उनकी इच्छानुसार सजी थी पर आज तो वह अपनी इच्छा से अपने ही हाथों अपना नख-शिख शृंगार कर रही थी। वह चाहती थी कि युवराज के हृदय सिंहासन पर वह इस तरह आसीन हो जाय कि किसी और के लिए वहाँ जगह बचे ही नहीं।

वह अपने रूप सौन्दर्य और गुण सौन्दर्य दोनों से युवराज को प्रसन्न करना चाहती थी। वह जानती थी कि स्थायित्व तो गुणसंपदा से ही प्राप्त होता है, रूप तो क्षणिक है। प्रारंभ में जरूर किसी को आकृष्ट कर सकता है। पर लम्बा रिश्ता तो गुणों के आधार पर ही तैयार होता है।

युवरानी के जेहन में बार-बार युवराज के वे शब्द गूंज रहे थे जो उन्होंने जाते वक्त कहे थे। युवराज ने जिस प्यार और प्यासी निगाहों से युवरानी को कहा था- आज वह महलों की चार दिवारी की अपेक्षा बंधन मुक्त वातावरण में

मात्र प्रकृति की साक्षी से उसके सानिध्य में रहना चाहते हैं तो वह सुनकर आनंद से पुलक उठी थी।

उसने युवराज के जाते ही अपनी नजरों के सामने अत्यन्त सुंदर और कलात्मक कुंज की रचना करवायी। वह चाहती थी कि राजकुमार के आने से पूर्व वह सारी तैयारी कराकर उन्हें अचंभित कर दे। आज महल के कर्मचारी वर्ग को भी अत्यन्त आश्चर्य था कि सदा शांत रहने वाली आत्म-केन्द्रित युवरानी आज इतनी अधिक चंचल क्यों है? पर वे प्रसन्न थे कि मालकिन की खुशी आज चरम पर है, उनके हाथ-पांव भी जैसे आज मशीन हो गये थे।

उद्यान में बने नये कुंज से संतुष्ट होकर युवरानी पुनः महलों में लौटी थी। वह स्वयं को दर्पण में देख ही रही थी कि युवराज की झलक दर्पण में देखते ही घूमी और चहकते हुए बोली- कहीं मैं सपना तो नहीं देख रही हूँ।

युवराज ने तरलता से कहा- सपना तो अब तक देख रही थी तुम अकेली नहीं मैं भी। आज से तो मैं जाग रहा हूँ। देखो मैंने तो अपना वायदा पूरा कर लिया है पर तुम्हारे क्या हाल है?

क्या आपको ऐसा लगता है कि इतने समय बाद आपने पहली बार अपनी इच्छा व्यक्त की और उसके पालन में हल्की सी चूक भी कर सकती हूँ! अपनी ओर से मैंने अच्छी से अच्छी तैयारी की है। विश्वास है कि आपको पसंद आयेगी।

युवराज के भीतर तूफान चल रहा था। उसका हृदय उसे बार-बार धिक्कार रहा था। क्यों वह अपनी स्वार्थपूर्ति में युवरानी को भी सीढी की तरह उपयोग में ले रहा है। कक्ष से बाहर उपवन में निर्मित कुंज में शयन करना उसकी चौर्य क्रिया में अनुकूल रहेगा। यही सोचकर तो उसने बाहर शयन की योजना बनाई थी। बहाना उसने प्यार का किया था। क्या वह नाटक अपनों के साथ अपराध नहीं है? यह सच है कि वह युवरानी के प्रति निरंतर संवेदनशील होता जा रहा था। पर आज कुंज में शयन तो भावनाओं की पूर्ति नहीं अपितु भावनाओं से खिलवाड़ है, वह क्या करे?

वह निरंतर अपने आप से संघर्ष कर रहा था। आज तक तो उसके पास एक ही मन था पर अभी कुछ समय से उसका मन दो भागों में विभाजित हो गया था। एक मन तो वह था जो निरंतर उसे मात्र अपने लक्ष्य के प्रति सावधान कर रहा था पर दूसरा मन वह था जो उसे अपने कर्तव्य और धर्म के प्रति निष्ठावान् होने की प्रेरणा दे रहा था।

उसके मन ने कहा- क्या यह उचित है कि तुम भोली और मासूम अपनी पत्नी को प्यार में उलझाकर अपनी मनमर्जी चलाओ? क्या इसी में तुम्हारे पौरुष की गरिमा है? तुरंत दूसरे मन ने कहा- पर मैं क्या करूँ? अपने साथियों के साथ मैंने वायदा किया था कि नगर सेठ के घर चोरी करके हम इतने मालामाल हो जायेंगे कि पूरी जिंदगी आसानी से कट जायेगी। परिजनों को, पहरेदारों को और स्वयं पिताजी को अब मुझ पर इतना शक हो गया है कि रात को बाहर जाना कठिन है। उपवन से बाहर जाना आसान है। इसमें युवरानी के साथ क्या अत्याचार है? युवरानी को भी प्रसन्न रखूंगा और मेरा काम भी कर लूंगा।

प्रथम मन पुनः गुर्राया- तुम गलत कह रहे हो! तुम्हारा मुख्य लक्ष्य युवरानी की प्रसन्नता है या अपनी खुद की इच्छापूर्ति! युवरानी तुम्हारी बातों पर विश्वास करके आज कितनी आह्लादित है। अगर युवरानी को पता चला कि युवराज ने सुविधा के लिए उपवन का चुनाव किया था तो उसका हृदय कितना टूटेगा! अभी भी वक्त है तुम सन्मार्ग में लौट आओ।

दूसरे मन ने तुरंत प्रतिकार किया- नहीं.. नहीं! इतने वर्षों की दोस्ती तुम्हारी भावुक बातों से खत्म नहीं कर सकता। जो भी होगा उसके लिए मैं तैयार हूँ। परंतु यह कार्य तो मुझे करना ही है।

अब विचारा मन क्या कहता। उसने चुप रहने में ही अपना कल्याण समझा।

युवराज अब पूर्णतः शान्त था। उसने चंचलता पूर्वक युवरानी को अपनी बाहों में मजबूती से थामते हुए कहा- मुझे अपने प्यार पर पूरा भरोसा है। उसकी रुचि और मेरी रुचि अलग नहीं है। जब हम दोनों दो जिस्म एक प्राण है तो हमारी

पसंद भिन्न कैसे हो सकती है! चलो अब मुझे भूख लगी है। जल्दी भोजन कर लें ताकि रात्रि भोजन के दोष से बच सकें, ऐसा कहते हुए युवरानी का हाथ पकड़ कर वे भोजन कक्ष में पहुंच गये।

युवरानी ने आग्रह पूर्वक विभिन्न प्रकार की भोजन सामग्री युवराज की थाली में परोसनी शुरु की पर युवराज को आज भोजन नहींवत् करना था ताकि वह रात्रिजागरण कर सके।

युवरानी ने नाराज होते हुए कहा भी- आप तो कह रहे थे कि बहुत तेज भूख लगी है पर खाया तो कुछ भी नहीं।

युवराज ने कहा- हर पत्नी को सदा यही लगता है उसके पतिदेव ने कुछ नहीं खाया, भले ही वे दो समय का भोजन एक समय में कर ले। यह इनके प्रेम का प्रतीक है। तुमको अपने आनंद की अनुभूति में पता ही नहीं चला कि तुम कुछ और कुछ और कहते-कहते कितना खिला चुकी हो।

अब तुम भोजन कर लो फिर हम अपने गृहमंदिर में भगवान् की आरती करके उपवन में चले।

युवरानी को लगा- इतनी अधिक खुशियों को वह अपने छोटे से आंचल में क्या समेट सकेगी? कुदरत ने आज इसकी रिक्त झोली को छप्पर फाड़कर भर दिया है।

उसने अदृश्य सत्ता को नमन करते हुए कहा- हे देवता! मेरी खुशी को मैली नजर से बचाना।

पर वाह रे भाग्य विधाता! क्या तुम्हें समय से पहले कोई पढ पाया है? क्या तुम्हारी मार से कोई बच पाया है?

(क्रमशः)

पूज्यश्री का कार्यक्रम

पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म. ठाणा 4 ने कारोला नगर में अंजनशलाका प्रतिष्ठा की संपन्नता के पश्चात् ता. 27 जनवरी को द्वारोद्घाटन विधान संपन्न कराके सेवाडा, गांधव, गुडामालाणी होते हुए ता. 29 जनवरी 2020 को शाम को सिणधरी नगर में प्रवेश किया। ता. 30 जनवरी को संपन्न हुई दो भागवती दीक्षा समारोह को अपनी सानिध्यता प्रदान कर शाम विहार कर वंश जसोदा विहार धाम लोहिडा पधारे। वहाँ से विहार कर ता. 1 फरवरी को नाकोडाजी, 2 फरवरी को जसोल होते हुए ता. 3 फरवरी को बालोतरा में नगर प्रवेश करेंगे। जहाँ उनकी पावन सानिध्यता में 7 फरवरी को कुमारी पायल बागरेचा की भागवती दीक्षा एवं ता. 8 फरवरी को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ रणुजा तीर्थ की अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न होगी। तत्पश्चात् वहाँ से विहार कर ता. 14 फरवरी 2020 को खेतासर पधारेंगे। जहाँ त्रिदिवसीय महोत्सव के साथ ता. 16 फरवरी को श्री मुनिसुव्रतस्वामी जिनमंदिर एवं जिनचन्द्रसूरि दादावाडी की प्रतिष्ठा संपन्न होगी। वहाँ से विहार कर ता. 24 फरवरी को बाडमेर पधारेंगे। जहाँ ता. 26 फरवरी को कुमारी पूजा संखलेचा की भागवती दीक्षा एवं हाला जैन श्री संघ द्वारा निर्मित श्री गौडी पार्श्वनाथ प्रभु के मंदिर की प्रतिष्ठा संपन्न होगी।

बाडमेर में 27 व 28 फरवरी को हस्तीमलजी बोथरा के जीवित महोत्सव के आयोजन के पश्चात् विहार कर चौहटन पधारेंगे। वहाँ उनकी निश्रा में कुमारी रेखा सेठिया एवं कुमारी नेहा बोथरा की भागवती दीक्षा ता. 4 मार्च 2020 को संपन्न होगी। यहाँ से विहार कर चितलवाना पधारेगें जहाँ 11 मार्च 2020 को प्रतिष्ठा महोत्सव आयोजित होगा, वहाँ से जहाज मन्दिर की और विहार होगा।

संपर्क सूत्र

पूज्य गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

द्वारा- श्री बाबुलालजी लूणिया, श्री महावीर ट्रेडिंग कं.,

5.श्रेयस एस्टेट, सोनारिया ब्लॉक के सामने, जनरल हॉस्पीटल रोड, बापुनगर, अहमदाबाद-380021 (गुजरात)

मुकेश प्रजापत- 7987151421

सिवाड़ा नगर में एक ऐतिहासिक गच्छीय महोत्सव
उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म. की आचार्य पदवी संपन्न

सिवाडा 20 जनवरी। सांचोर निकटवर्ती सिवाडा गांव में पूज्य गुरुदेव अर्वति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की परम पावन निश्रा में पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक उपाध्याय प्रवर श्री मनोज्ञसागरजी म.सा. को ता. 20 जनवरी 2020 माघ वदि 11 के मंगल मुहूर्त्त में आचार्य पद से विभूषित किया गया।

पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री मनितप्रभसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री कल्पज्ञसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री नयज्ञसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री मयूखप्रभसागरजी म. पूज्य मुनिराज श्री महितप्रभसागरजी म. का पावन सानिध्य रहा।

पूजनीया गणिनी पद विभूषिता श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म., विमलप्रभाश्रीजी म., हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. आदि ठाणा एवं पू. साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. प्रशमिताश्रीजी म. अर्हम्निधिश्रीजी म. आदि ठाणा का सानिध्य उपलब्ध रहा।

महोत्सव का संपूर्ण लाभ श्रीमती जमनादेवी जेठमलजी वनेचंदजी रायचंदजी दरगाजी गांधी परिवार चितलवाना निवासी ने लिया। उनकी ओर से स्वद्रव्य से निर्मित श्री सीमंधर स्वामी जिनमंदिर एवं दादावाडी के अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव के साथ ही आचार्य पद महा महोत्सव का आयोजन था।

ता. 20 जनवरी 20 को प्रातः शुभ मुहूर्त्त में परमात्मा की प्रतिष्ठा संपन्न होने के पश्चात् आचार्य पद का विधान प्रारंभ हुआ।

सकल श्री संघ के साथ बाजते-गाजते पूज्य उपाध्यायश्री को सुखसागर सभा मंडप में प्रवेश करवाया गया। पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने आचार्य पद का विधान करवाया। उन्हें निषद्या के साथ स्थापनाचार्यजी प्रदान किये गये। नूतन आचार्यश्री ने पूज्य गच्छाधिपतिजी की तीन प्रदक्षिणा लगाई। केसर से पूजित उनके दांयें कान में पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने सूरिमंत्र सुनाया।

नामकरण से पूर्व पूज्य गच्छाधिपतिश्री ने नूतन आचार्यश्री को हित शिक्षा प्रदान की। उन्होंने कहा- आज मैं तुम्हें पंच परमेष्ठि में तीसरे पद अर्थात् आचार्य पद पर प्रतिष्ठित कर रहा हूँ। यह पद सामान्य नहीं है। तुम्हें बहुत जिम्मेदारी और मर्यादा बोध के साथ निभाना है। समस्त साधु-साध्वियों के प्रति वात्सल्य भाव रखना। कठोर भी होना...। जहाँ कोई त्रुटि नजर आये, उसे कभी नजरअंदाज मत करना। गच्छ की मर्यादा बनाये रखना। गच्छ को उँचाईयों पर ले जाने का प्रयत्न करना।

पूज्यश्री ने कहा- नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरि हमारे समुदाय के द्वितीय आचार्य होंगे।

आज इन क्षणों में पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री जिनकांतिसागरसूरिजी म. की स्मृति आंखों में तैर रही है। जिनका आज ही 108 वां जन्मोत्सव दिवस भी है। निश्चित ही वे देवलोक से इस दृश्य को निहार कर परम प्रसन्नता का अनुभव कर रहे होंगे। और दिव्य आशीर्वाद की वर्षा कर रहे होंगे।

पूज्यश्री ने कहा- अपन दोनों की दीक्षा में ज्यादा अंतराल नहीं है। मात्र 4 महिना 25 दिन का अन्तर है। साथ में पढना, लिखना हुआ है। बचपन साथ-साथ बीता है। आज तुम्हें आचार्य पद प्रदान करके मेरे अन काम करना।

इस अवसर पर पूज्य नूतन आचार्यश्री ने कहा- आज मैं पूज्य गुरुदेवश्री को, पूज्य पिताजी म. श्री प्रतापसागरजी म. को, मेरी माताजी देमीबाई को एवं मुझे शिक्षा प्रदान करने वाले पू. साध्वी श्री मोहनश्रीजी म. किरणश्रीजी म. हेमलताश्रीजी म. का स्मरण करता हूँ।

आज मुझे पूज्यश्री ने जो मेरे बडे गुरु भाई है, आचार्य पद दिया है, मैं समझता हूँ कि मैं इस महान् पद के योग्य नहीं हूँ। पिछले दो वर्षों से पूज्यश्री लगातार इस हेतु फरमा रहे थे, पर मैं इंकार कर रहा था। पर आखिर आज उनकी इच्छा को मुझे स्वीकारना पड रहा है। पूज्यश्री ने जो विश्वास व्यक्त किया है, उसे मैं पूरी तरह से निभाने की कोशिष करूँगा।

विधि विधान के अन्तर्गत पूज्य गच्छाधिपति गुरुदेवश्री ने अपने सिंहासन पर नूतन आचार्यश्री को बिराजमान किया। तथा विधिवत् द्वादशावर्त वंदन किया। यह शास्त्रीय विधि है। नूतन आचार्यश्री की महिमा को सकल श्री संघ के समक्ष बढाने के लिये यह विधान किया जाता है। उसके बाद नामकरण का विधान हुआ। ज्योंहि पूज्यश्री ने नूतन आचार्यश्री का नाम 'आचार्य जिनमनोज्ञसूरि' घोषित किया। सारी जनता ने जयघोष से नभोमंडल गुंजा दिया। सूरि मंत्र पट्ट अर्पण का लाभ श्री गुलाबचंदजी भरतकुमारजी हेमंतकुमारजी लूणिया शेरगढ वालों ने लिया। आचार्य पद की कामली का लाभ श्री बाबुलालजी भरतकुमारजी पवनकुमारजी सेठिया धोरीमन्ना वालों ने लिया। गुरुपूजन का लाभ वीरचंद पवनकुमार दिनेशकुमार शंकरलालजी लालण भाडखा-भिवंडी ने किया। तत्पश्चात् अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा एवं अखिल भारतीय जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ तथा श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी द्वारा संयुक्त रूप से कामली ओढाई गई। बाद में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् ने कामली ओढाई। फिर क्रमशः अनेक संघों व श्रद्धालुजनों द्वारा कामली ओढाकर नूतन आचार्यश्री का बहुमान किया गया।

गच्छ के पूज्य साधु-साध्वीजी भगवंतों द्वारा कामली अर्पण की गई।

आचार्य पदारोहण पर आयोजक परिवार से लक्ष्मीचंदजी घेवरचंदजी सूरजप्रकाशजी हस्तीमलजी गांधी परिवार ने गुरुपूजन व कामली अर्पण कर गुरुभक्ति प्रकट की।

आचार्य पद के इस महोत्सव में चितलवाना, सांचोर, हाडेचा, कारोला, सिणधरी, बालोतरा, मोकलसर, पादरु, शेरगढ, थोब, बीकानेर, फलोदी, नागोर, गांधव, सूरत, नवसारी, गुडामालानी, नगर, रामजी का गोल, बाडमेर, चौहटन, धोरीमन्ना, बामणोर, बाछडाउ, सनावडा, रामसर, हरसाणी, झिंझणीयाली, जैसलमेर, बरमसर, भादरेश, बिशाला, भाडखा, सियाणी, मोखाब, कोटडा, शिव, भाडली, झाख, बायतु, धानेरा, डीसा, अहमदाबाद, मुंबई, जयपुर, जोधपुर, ब्यावर, पाली, ग्वालियर, दुर्ग, रायपुर, दल्लिराजहरा, नंदनी-खुंदनी, कवर्धा, महासमुंद, भानुप्रतापपुर, डोंडीलोहारा, अहिवारा, बेरला, देवकर, बोडेगांव, धमतरी, नगरी, सुरगी, नारायणपुर, चेन्नई, बैंगलोर आदि क्षेत्रों के श्रावक गण बडी संख्या में उपस्थित थे।

खरतरगच्छ पेढी के अध्यक्ष एवं जीतो के पूर्व चेयरमेन संघवी श्री तेजराजजी गुलेच्छा, कुशल वाटिका के अध्यक्ष

श्री भंवरलालजी छाजेड, पेढी के महामंत्री श्री पदमजी टाटिया आदि विशिष्ट व्यक्तित्व के साथ महासंघ के पदाधिकारी उपस्थित थे। खरतरगच्छ के इतिहास में इस पदारोहण से एक नया स्वर्णिम पृष्ठ जुड गया।

नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी महाराजा साहेब के आचार्य पदारोहण पर उपकरणों के लाभार्थी परिवार

1. सूरिमंत्र पट वहोराना

शा. गुलाबचंदजी भरतकुमारजी हेमंतकुमारजी लूणियां परिवार, शेरगढ़-सूरत ।

2. आचार्य पद की कांबली वहोराना

शा. बाबुलालजी भरतकुमारजी पवनकुमारजी सेठिया परिवार, धोरीमन्ना-मदुराई ।

3. गुरुपूजन

शा. वीरचंद पवनकुमार दिनेशकुमार शंकरलालजी लालण परिवार भाडखा-भिवंडी ।

4. स्थानाचार्य वहोराना

शा. समरथमलजी सोनाजी रांका परिवार, चेन्नई ।

5. माला वहोराना

श्री कुशल कांति खरतरगच्छ जैन संघ सूरत ।

6. आसन वहोराना

श्रीमती खम्मादेवी वनेचंदजी मण्डोवरा सिणधरी ।

7. वासकुंपा वहोराना

सुरजमलजी नेमीचंदजी पारख परिवार हरसाणी-सूरत ।

8. पातरा वहोराना

शा. जगदीशचंदजी श्रीपालकुमार सुरतानमलानी मालू चौहटन-हुबली-गोवा ।

9. डंडा वहोराना

बाड़मेर जैन श्री संघ, सूरत ।

10. संथारिया वहोराना

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ सिणधरी ।

11. उतरपट्टा वहोराना

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् ।

12. ठवणी वहोराना

श्री खरतरगच्छ जैन संघ चित्तलवाना ।

13. डंडासना वहोराना

श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ भायंदर ।

14. नामकरण

पू. नूतन आचार्य भगवंत का सांसारिक परिवार श्रीमती देमीदेवी छाजेड़ परिवार नंदनी-खुंदनी, दुर्ग छत्तीसगढ।

पाटण में सहस्राब्दी भवन का उद्घाटन का हर्षोल्लास

खरतरगच्छ नामकरण सहस्राब्दी निमित्त
अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद द्वारा
छः री पालित संघ का भव्य आयोजन

॥ श्री महावीर स्वामी नमः ॥

॥ दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः ॥

चतुर्थ दादा गुरुदेव अकबर प्रतिबोधक

श्री जिनचन्द्रसूरिजी की जन्मभूमि

श्री खेतासर नगरे (ओसियां–राजस्थान)

श्री मुनिसुव्रतस्वामीजी जिनमंदिर एवं श्री जिनचन्द्रसूरि दादावाड़ी

भव्य अंजनशलाका एवं प्रतिष्ठा महोत्सव प्रसंगे

भाव भरा आमंत्रण

* प्रेरणादाता एवं पावन निश्रा *

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य

श्री जिन मणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

महोत्सव प्रारंभ	वरघोड़ा	पावन प्रतिष्ठा
फाल्गुन वदि ६ शुक्रवार	फाल्गुन वदि ७ शनिवार	फाल्गुन वदि ८ रविवार
दि. १४ फरवरी २०२०	दि. १५ फरवरी २०२०	दि. १६ फरवरी २०२०

प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. की प्रेरणा से भारत वर्ष में दादावाड़ियों की सुरक्षा, संवर्धन, जिर्णोद्धार एवं खरतरगच्छ के विकास के लिए पेढ़ी की स्थापना हुई थी। पेढ़ी मे भोपालगढ़ में मंदिर व दादावाड़ी का निर्माण, द्वितीय दादा गुरुदेव मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरि की जन्मस्थली विक्रमपुर में जिनमंदिर एवं दादावाड़ी के निर्माण के साथ अनेक दादावाड़ियों के जिर्णोद्धार में यथा योग सहयोग प्रदान किया। पाटन में साधु–साध्वियों के लिए सहस्राब्दी भवन का निर्माण किया गया। विक्रमपुर के कार्य की संपूर्णता के साथ ही पेढ़ी ने चतुर्थ दादा गुरुदेव की जन्म स्थली खेतासर (जोधपुर जिला) में भव्य जिनमंदिर एवं दादावाड़ी निर्माण का संकल्प लिया। दुर्ग निवासी श्री जुगराजजी संचेती ने पूज्य गुरुदेव की प्रेरणा से अपना भूखण्ड पेढ़ी को प्रदान किया। खेतासर में जिनमंदिर, दादावाड़ी एवं गुरु पगलिया के निर्माण का कार्य पूर्णता की ओर अग्रसर है एवं प.पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिश्वरजी म.सा. की निश्रा में दि. १६ फरवरी २०२० को प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न होगा।

इस महोत्सव में सहभागी, सहयोगी एवं साक्षी बनने का अनुठा अवसर आया है। आप इस अवसर का अवश्य लाभ उठाएं।

सम्पूर्ण निर्माण एवं प्रतिष्ठा सहयोगी रु. 200000/-
परिवार के 5 नाम शिलालेख में उचित स्थान पर अंकित होंगे।

सम्पूर्ण निर्माण एवं प्रतिष्ठा सह सहयोगी रु. 100000/-
परिवार के 2 नाम शिलालेख में उचित स्थान पर अंकित होंगे।

निवेदक: **श्री जिनदत्त कुशलसूरी खरतरगच्छ पेढ़ी**

मोहनचंद डड्ढा	तेजराज गुलेच्छा	भंवरलाल छाजेड़	पदमकुमार टाटिया	दीपचंद बाफना
संरक्षक	अध्यक्ष	वरिष्ठ उपाध्यक्ष	महासचिव	कोषाध्यक्ष
98410 94728	94483 87442	99670 22183	98408 42148	98250 06235

सांचोर में प्रतिष्ठा संपन्न

सांचोर 22 जनवरी। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा., पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. आदि ठाणा 7 पावन निश्रा में एवं पूजनीया गणिनी प्रवर श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 की पावन सानिध्य में सांचोर दादावाड़ी स्थित श्री शांतिनाथ जिनमंदिर में श्री आदिनाथ एवं श्री मुनिसुव्रत स्वामी की प्रतिमा की प्रतिष्ठा ता. 22 जनवरी 2020, माघ वदि 13 बुधवार को सानंद संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा के निमित्त पूज्यवरों का ता. 21 जनवरी को मंगल प्रवेश हुआ। पूज्यवर सिवाड़ा नगर से ता. 21 को प्रातः 8 बजे विहार कर 12 बजे सांचोर दादावाड़ी पहुंचे। श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ सांचोर द्वारा प्रवेश करवाया गया। पूज्यश्री का मंगल प्रवचन हुआ। प्रतिष्ठा निमित्त विधि-विधान विधिकारक हेमंतभाई, संजय भाई ने करवाया।

ता. 22 को प्रातः मंगल मुहूर्त नवांश में परमात्मा को गादीनशीन किया गया। श्री आदिनाथ प्रभु को विराजमान करने का लाभ श्रेष्ठिवर्य श्रीमती टीपुदेवी कालुचंदजी कसाजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार ने लिया तथा श्री मुनिसुव्रत स्वामी को विराजमान का लाभ श्रेष्ठिवर्य श्रीमती केसीदेवी कपूरचंदजी मरडिया परिवार ने लिया।

द्वारोद्घाटन का लाभ प्रकाशजी छगनमलजी बोथरा कानूगो ने लिया।

गुरु पूजन का लाभ मूल हरसाणी वर्तमान सांचोर-जालोर निवासी श्रेष्ठिवर्य श्री कल्याणदासजी भीखचंदजी छाजेड़ परिवार ने लिया।

प्रतिष्ठा के पश्चात् पूज्यवरों ने कारोला नगर की ओर विहार किया।

पंच दिवसीय युवती संस्कार शिविर का आयोजन

चैन्नई 29 दिसंबर। श्री धर्मनाथ मंदिर के आराधना भवन के प्रांगण में पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी पू. सुप्रसिद्ध व्याख्यात्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्यायें पू. प्रियंवदाश्रीजी म. पू. शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा 6 की निश्रा में पंच दिवसीय युवती शिविर का आयोजन किया गया। प्रारंभ में मंगलाचरण के साथ संघ के सदस्यों के द्वारा परमात्मा की फोटो और सरस्वती माता की मूर्ति के सम्मुख दीप प्रज्वलन करवाकर संस्कार शिविर की आवश्यकता का विवेचन साध्वी शुद्धांजनाश्रीजी द्वारा किया गया। साध्वी योगांजनाश्रीजी के द्वारा शिविरार्थियों को जिनमंदिर संबंधी और गुरुवंदन आदि का सारगर्भित विवेचन समझाया गया। साध्वी प्रमुदिताश्रीजी द्वारा जैन भूगोल शिविरार्थियों को सुंदर शैली में समझाया गया। प्रतिदिन ध्यान, योग, प्रणायाम, सामायिक आदि कराए गए।

शिविर में श्रीमति बैना शाह, डॉ. नंदा व ज्योति थॉमस, सुश्री खुशी जैन, निलमजी जैन, अरविंद कोठारी आदि के द्वारा विविध विषयों पर वक्तव्य दिया गया। शिविरार्थियों की परिक्षा ली गई जिसमें 12 से 15 वर्ष की उम्र वाली बालिकाओं में प्रथम, द्वितीय आदि स्थान ऋत्वि, भव्या गुलेच्छा और डेनिशा जैन प्राप्त किया। 15-25 वर्ष की बालिकाओं में आरती जैन, जागृति गुलेच्छा और पूजा झाबक ने प्राप्त किया। सभी को संघ के सदस्यों द्वारा पुरस्कृत किया गया। संघ के सदस्य मंत्री धर्मचंदजी गुलेच्छा, बाबुलालजी गुलेच्छा, डॉ. ज्ञानजी जैन, विचक्षण महिला मण्डल, बहु मंडल आदि सभी ने उपस्थित होकर सहयोग दिया। शिविर में सभा संचालन अनिताजी सोलंकी, मुकेशजी गुलेच्छा और अरविन्दजी कोठारी के द्वारा किया गया।

खरतरगच्छ नामकरण सहस्राब्दी निमित्त

अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद द्वारा छः री पालित संघ का भव्य आयोजन

पाटण 12 जनवरी। जिनशासन की प्रमुख धारा खरतरगच्छ अपने नामकरण के 1000 वर्ष पूर्ण करने के उपलक्ष्य में खरतरगच्छ सहस्राब्दी समारोह का आगाज करने का मुख्य दायित्व युवाओं को मिला।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., उपाध्याय प्रवर (भावी आचार्य) श्री मनोज्ञसागरजी म.सा., गणिवर्य श्री मणिरत्नसागरजी म.सा. आदि मुनि मण्डल एवं चंपा मण्डल से साध्वीवर्या श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म.सा. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म.सा., अनुभव मण्डल से साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म.सा. आदि साध्वी मंडल की पावन निश्रा में शंखेश्वर महातीर्थ से खरतरगच्छ नामकरण स्थली पाटण महातीर्थ का 2000 आराधकों का विराट एवं भव्यातिभव्य छः री पालित संघ का आयोजन अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद के तत्त्वावधान में हुआ।

गच्छाधिपति गुरुदेव गिरनार में आयोजित नव्वाणुं यात्रा की संघमाला कार्यक्रम में निश्रा प्रदान कर उग्र विहार करके शंखेश्वर महातीर्थ पधारे।

पूज्य गच्छाधिपति सहित समस्त साधु-साध्वीजी का संघ निमित्त मंगल प्रवेश 7 जनवरी को श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी में धूमधाम से हुआ। मंगल प्रवेश शोभायात्रा शंखेश्वर पार्श्वनाथ मुख्य मंदिर से प्रारम्भ हुई। सभी आराधक एवं कार्यकर्त्ता अनुशासित होकर पंक्तिबद्ध चलकर शोभायात्रा दादावाडी के निकट टेन्ट से बसाई सुंदर, भव्य एवं आकर्षक 'पंचासरा पार्श्वनाथ नगरी' के द्वार पर पहुंची। पंचासरा पार्श्वनाथ नगरी उद्घाटन का लाभ संघ के मुख्य संघपति परिवार श्रीमती गजीदेवी मिश्रीमलजी बोथरा परिवार सुपुत्र गौतमजी, रतनजी, जगदीशजी बोथरा परिवार ने लिया।

धर्मसभा में स्वागत भाषण केयुप के राष्ट्रीय चेयरमेन श्री पदमजी बरडिया ने दिया। सभा में मुमुक्षु पायल बागरेचा, मुमुक्षु पूजा संकलेचा, मुमुक्षु रेखा सेठिया, मुमुक्षु नेहा बोथरा का अभिनंदन किया गया।

संघ एवं आराधकों की व्यवस्था में सहयोग देने हेतु श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, शंखेश्वर के अध्यक्ष संघवी वंसराजजी भंसाली एवं समस्त ट्रस्ट मण्डल का बहुमान किया गया। केयुप की ओर से दादावाडी आधार स्तम्भ में भी लाभ लिया।

धर्मसभा को गुरुदेव ने सम्बोधित करते हुए फरमाया कि संघ में छः री एवं जिनाज्ञा का पालन करना अनिवार्य है। गच्छ की परम्पराओं से जुडना है एवं गच्छ के महान् आचार्यों की यशोगाथा एवं खरतरगच्छ इतिहास को जानना है।

दिनांक 8 जनवरी का सूर्योदय नई ऊर्जा, नई ताजगी लेकर उदित हुआ। जैसे स्वप्न साकार हो रहे थे, कल्पनाएं हकीकत बनकर जमीं पर उतर रही थीं। जो दायित्व गुरुदेव ने केयुप के युवाओं को धुलिया में दिया था वो आज इतिहास के स्वर्णिम पृष्ठ बन रहे थे। आज संघ के मंगल प्रयाण का दिवस। प्रथम मंदिरजी में संघपति बोथरा परिवार द्वारा पूजा अर्चना हुई।

प्रथम संघपति तिलक का लाभ केयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्रीमान् सुरेशजी लुणिया परिवार धोरीमन्ना ने लिया एवं तिलक द्वारा हार्दिक शुभकामनाएं दी।

मुख्य अतिथि के रूप में जीतो ॲपेक्स के चेयरमैन श्री गणपतजी चौधरी, एल.डी. इंस्टीट्युट के डायरेक्टर डॉ. जीतूभाई शाह अहमदाबाद, भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्रभाई मोदीजी के बड़े भ्राता श्री सोमाभाई मोदी, शंखेश्वर दादावाडी ट्रस्ट के अध्यक्ष संघवी वंसराजजी भंसाली, खरतरगच्छ पेढी के कोषाध्यक्ष श्री दीपचंदजी बाफना, प्रकाशजी कानूंगो, बाबुलालजी लुणिया, पुखराजजी तातेड, भुपतजी कांटेड आदि विशिष्ट व्यक्तियों का पदार्पण हुआ। सभी का केयुप द्वारा बहुमान किया गया।

गुरुदेव ने पूर्ण विधि-विधान करवाकर मंत्रोच्चार एवं मंगलाचरण द्वारा सभी को सुरक्षा कवच प्रदान किया।

विशिष्ट अतिथी सह केयुप के संस्थापक चेयरमेन संघवी श्री अशोकजी भंसाली एवं केयुप के संस्थापक अध्यक्ष श्री रतनजी बोथरा ने हरी झंडी दिखाकर संघ प्रयाण करवाया। दि. 8 जनवरी से प्रारम्भ पंच दिवसीय संघ विभिन्न गांवों में, जिसमें मुजपुर, जासका, कुरेजा, कुणघेर, आदि गांवों में स्थित जिनमंदिरों के दर्शन-पूजन करता हुआ अपने लक्ष्य पाटण महातीर्थ के निकट पहुंचा।

प्रतिदिन 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक धार्मिक आराधनाओं व्यस्ततम कार्यक्रमों में कब प्रभात होती और कब रात होती पता ही नहीं चलता। उभयकाल प्रतिक्रमण, भक्तामर, दादा गुरुदेव इकतीसा, गुरुदेव द्वारा मंगलाचरण, पैदल विहार, प्रवचन, स्नात्र पूजा, एकासना फिर प्रवचन, कुमारपाल महाराजा की आरती, भक्तिमय संवेदना गुरुदेव द्वारा और रात्रि भक्ति संगीतकार द्वारा आदि हर आराधना में आराधक दौडकर दिल से जुड़ जाता था। अतिशय सर्दी भी बडे व बुजुर्ग लोगों की हिम्मत से अप्रभावी व निराश थी।

दि. 12 जनवरी की उदित उषा ने केयुप कार्यकर्ताओं को छःरी पालित संघ की निर्विघ्नता का संदेश दिया। हर कार्यकर्त्ता नाच रहा था, हर आराधक खुश था और आयोजक केयुप अपनी सफलता पर अभिभूत था। आज आनंद चरम पर था क्योंकि दादा पंचासरा पार्श्वनाथ प्रभु से साक्षात्कार होने वाला था। जिस गच्छ ने हमें धर्म से जोडा ऐसे महान् खरतरगच्छ की जन्मभूमि एवं मातृभूमि की चरणवंदन का सौभाग्य जो मिलने वाला था। मुनि मनितप्रभसागरजी म. पंचासरा प्रभु के दरबार में भक्ति की गंगा में बहाकर कर्मरज से मुक्त कर रहे थे। वैसे ही पार्श्वनाथ प्रभु की सूरत जैसे शिवत्व एवं अमरत्व का वरदान दे रही थी।

आज परम गुरुभक्त मोहनचंदजी ढड्ढा, संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य श्री सुनीलजी सिंघी आदि अनेक अतिथियों का आगमन हुआ।

पूज्य गुरुदेव के मार्गदर्शन में नवनिर्मित खरतरगच्छ सहस्राब्दी भवन का निर्माण हो चुका था जिसका उद्घाटन मरडिया परिवार द्वारा किया गया।

पूज्य गच्छाधिपतिश्री एवं प्रखर प्रवचनकार मुनि मनितप्रभसागरजी ने खरतरगच्छ का संक्षिप्त इतिहास बताया।

पंचासरा दरबार में पहुंचने से पहले 3 किमी लम्बा चला सुशोभित व अनुशासित वरघोडा देखकर हर व्यक्ति आश्चर्यचकित था। हर व्यक्ति की जुबान पर एक ही बात थी कि ऐसा भव्य वरघोडा पहली बार देखा है। वरघोडे एवं संघमाला में त्रिस्तुतिक संप्रदाय के मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म. आदि मुनि मण्डल ने भी अपना सानिध्य प्रदान किया।

पूरे देश में जिस संघ की चर्चा थी उस भव्य संघ को निहारने एवं संघमाला कार्यक्रम में सहभागी होने हजारों अतिथियों एवं दर्शनार्थियो का आगमन हुआ।

दोपहर में गुरुदेव ने संघपति परिवार को विधि-विधान सहित संघवी पद आरोहण करवाया। त्रिस्तुतिक संप्रदाय के मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी ने कहा कि खरतरगच्छ के ही सागरचंद्रजी म.सा. ने हमारे आद्य आचार्य अभिधान राजेन्द्र कोष के निर्माता श्रीमद्विजय राजेन्द्रसूरिजी म. को अध्ययन करवाया था।

मुख्य संघपति बोथरा परिवार के साथ 137 परिवारों ने संघ संहयोगी के रूप में लाभ लिया था सभी संघ सहयोगियों का बहुमान किया गया।

भारत भर के करीब 200 गांवों से पधारे 2000 आराधकों का अभिनंदन पाद प्रक्षालन, तिलक, माला, श्रीफल मोमेन्टो एवं स्मृति-उपहार द्वारा किया गया।

केयुप अध्यक्ष श्री सुरेशजी लुणिया ने स्वागत भाषण द्वारा सभी मेहमानों का स्वागत किया। संघ की सफलता हेतु जिन्होंने बहुत पुरुषार्थ किया ऐसे संघ संयोजक श्री प्रदीपजी श्रीश्रीमाल, सह संयोजक नरेश लुणिया, पुरुषोत्तमजी सेठिया, राजेन्द्र सेठिया, सुरेशजी भंसाली, पुरुषोत्तमजी धारीवाल(हप्पनजी), शांतिलालजी मरडिया, राजीवजी खजांची का बहुमान केयुप के राष्ट्रीय पदाधिकारी पदमजी बरडिया, सुरेशजी लुणिया, रमेश लुंकड, राजीवजी खजांची, ललितजी डाकलिया, पंकजजी बाफणा ने किया।

अंत में केयुप के राष्ट्रीय महामंत्री रमेश लूंकड ने सभी कमिटी, जिसमें मुख्य भोजन समिति के प्रमुख श्री सुरेन्द्रजी रांका, भैरुलालजी लुणिया के साथ सभी कार्यकर्ताओं, समितियों, संघ सहयोगियों, आराधकों के प्रति हार्दिक आभार प्रकट किया।

विदाई की वेला में सभी की आंखें नम थीं। आराधकों ने केयुप की खूब प्रशंसा की व अगले कार्यक्रम में मिलने का विश्वास दिलाते हुए ऐतिहासिक छःरी पालित संघ एवं स्वर्णिम इतिहास के साक्षी बनने के सौभाग्य को सराहा।

रमेश लुंकड, महामंत्री केयुप

सहस्राब्दी भवन का उद्घाटन

श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा पाटण नगर में निर्मित खरतरगच्छ सहस्राब्दी भवन का उद्घाटन पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पू. उपाध्याय श्री मनोज्ञसागरजी म., पू. गणी श्री मणिरत्नसागरजी म., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री कल्पज्ञसागरजी म., पू. मुनिश्री नयज्ञसागरजी म., पू. मुनिश्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री महितप्रभसागरजी म. एवं पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. विमलप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में माघ वदि द्वितीया, रविवार ता. 12 जनवरी 2020 को रविपुष्य योग में संपन्न हुआ।

इस अवसर पर पाटण नगर में बिराजमान त्रिस्तुतिक संघ के पूज्य मुनिराज श्री चारित्ररत्नविजयजी म. संघ के साथ पधारे। उन्होंने कहा- खरतरगच्छ की इस जन्मभूमि पर खरतरगच्छ संघ का हम स्वागत करते हैं। इस अवसर पर पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री, पू. उपाध्यायश्री मनोज्ञसागरजी म., पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने गच्छ की महिमा का वर्णन किया।

उद्घाटन का लाभ कारोला निवासी श्रीमती संतीदेवी सिरेमलजी भीखाजी परिवार के श्री हस्तीमलजी शांतिलालजी हरेशकुमार पारसमलजी मरडिया परिवार ने लिया।

यह ज्ञातव्य है कि इसी अणहिल्ल पत्तन-पाटण नगर में दुर्लभ राजा की राजसभा में आचार्य जिनेश्वरसूरि को वि. सं. 1075 में खरतर विरूद प्राप्त हुआ था। तब से जिनशासन की सुविहित परम्परा चन्द्रगच्छ ही खरतरगच्छ के नाम से प्रसिद्धि को प्राप्त हुई।

पूज्य गुरुदेव आचार्य श्रीजी प्रेरणा से खरतर बिरूद नामकरण सहस्राब्दी के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की ओर से श्री शंखेश्वर तीर्थ से पाटण तीर्थ का छहरी पालित संघ का आयोजन किया गया। ता. 8 जनवरी से प्रारंभ संघ ता. 12 जनवरी को पाटण पहुंचा। संघ के पाटण प्रवेश के अवसर पर सहस्राब्दी भवन का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर भारत के अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य माननीय श्री सुनीलजी सिंघी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे थे। पाटण नगरपालिका चेयरमेन आदि का बहुमान किया गया। इस अवसर पर सर्वश्री मोहनचंदजी ढड्ढ़ा, पेढी के अध्यक्ष संघवी तेजराजजी गुलेच्छा, कोषाध्यक्ष दीपचंदजी बाफना आदि श्रेष्ठिजन बडी संख्या में उपस्थित थे।

कुशल वाटिका जिनालय की सातवीं वर्षगांठ सम्पन्न

बाड़मेर 27 जनवरी। बाडमेर अहमदाबाद रोड पर स्थित कुशल वाटिका प्रांगण में भगवान मुनिसुव्रत स्वामी जिनमन्दिर, दादावाड़ी, नवग्रह मन्दिर, देवी-देव मन्दिर, एवं गुरु मन्दिर की सप्तम वर्षगांठ हर्षोल्लास के साथ मनाई गई।

पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से पूज्या डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म. की प्रेरणा से प्रवर्तिनी प्रमोदश्रीजी म.सा. की स्मृति में बनी कुशल वाटिका में यह उत्सव प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वी सौम्यगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा-3 की पावन निश्रा में अठारह अभिषेक, सतरह भेदी पूजा, विजय मुहूर्त में शिखर पर लाभार्थी परिवारों द्वारा मन्त्रोच्चार के साथ ध्वजारोहण किया गया।

मूलनायक श्री मुनिसुव्रतस्वामी भगवान की मुख्य ध्वजा भंवरलाल विरधीचन्द छाजेड परिवार हरसाणी वालों की ओर से चढाई गई। उसके बाद कुशल वाटिका ट्रस्ट द्वारा नवकारसी का आयोजन किया गया। वर्षगांठ में अनुकरणीय सेवा देने वाले मण्डलों व संस्थाओं का ट्रस्ट मण्डल द्वारा आभार व्यक्त किया गया। -केवलचन्द छाजेड

ज्ञान वाटिका चैन्नई का शुभारंभ

चैन्नई 26 जनवरी। जैन धर्मशाला में श्री जिनदत्तसूरि जैन धर्मशाला में ज्ञान वाटिका का उद्घाटन किया गया। ज्ञान वाटिका का संचालन श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल द्वारा संचालित श्री विचक्षण जैन तत्त्वज्ञान केंद्र के तत्वावधान में जैन धर्म के भविष्य की धरोहर बालक बालिकों के जीवन-निर्माण हेतु किया जा रहा है।

इस अवसर पर प्रसिद्ध व्याख्यात्री हेमप्रभाश्रीजी म.सा. की सुशिष्या पूज्या साध्वी प्रियंवदाश्रीजी म.सा. शुद्धांजनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा ने उद्घाटन समारोह में सानिध्य प्रदान किया।

ज्ञान वाटिका के संयोजक राजेश गुलेच्छा सभी का स्वागत करते हुए ज्ञान वाटिका की रूपरेखा प्रस्तुत की। सहसंयोजक धीरज बोथरा ने सभा को बताया कि इस ज्ञान वाटिका का प्रयास होगा कि हर उम्र के युवक एवं बच्चों को जोड़ा जाये। ज्ञान वाटिका हर रविवार सुबह होगी और छात्रों को प्रोत्साहित करने के लिए पुरस्कार प्रदान किये जायेंगे।

ज्ञान वाटिका के भावी छात्रों में कई सीए, वकील, इंजीनियर आदि के नाम रजिस्टर किये गए। ज्ञान वाटिका के प्रथम वर्ष के मुख्य लाभार्थी श्री उगमकँवर भवरलालजी सेठिया परिवार का श्री जिनदत्तसूरि जैन मंडल द्वारा बहुमान किया गया। विमल लोढ़ा ने सभी अतिथियों को नवकारसी करवाने का कार्यभार संभाला।

इस अवसर पर श्रीमती उगमकंवर सेठिया, श्रीमती अनीता सोलंकी, श्रीमती सरिता लुनावत एवं श्रीमती मंजू गुलेछा ने श्री धर्मनाथ भगवन को माल्यार्पण किया। इस अवसर पर मदनचंदजी झाबक, महावीरचंदजी कोठारी, महेन्द्रजी कोठारी, बाबुलालजी गुलेच्छा, कुलदीपजी बरडिया, अशोकजी गुलेच्छा, महावीरचंदजी पारख (मंडल के उपाध्यक्ष), गौतम संकलेचा, जैचंदजी वैद, अशोकजी जैन आदि अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने उपस्थिति प्रदान की और ज्ञान वाटिका की सफलता के लिए कामना की।

-गौतम बी. संकलेचा

जसोल में अवंति तीर्थोद्धारकश्री का प्रवेश

जसोल 2 फरवरी। श्री जैन श्वेतांबर खरतरगच्छ संघ जसोल के तत्वावधान में दि. 2 फरवरी 2020 को अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. आदि ठाणा का जसोल नगर प्रवेश पर सामैया कर स्वागत किया गया।

प्रवेश समारोह में प्रवर्तिनीवर्या श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा की उपस्थिति रही। वहीं दीक्षार्थी बहिन मुमुक्षु पायल अशोककुमारजी बागरेचा का वरघोड़ा निकाला, जो मैन बाजार, महावीर चौक से रवाना होकर श्री शांतिनाथ भगवान मंदिर होते हुए पुराना ओसवाल भवन पहुंचकर विसर्जित हुआ।

इससे पहले आचार्य भगवंत का सामैया कर स्वागत किया गया। पुराना ओसवाल भवन में सामूहिक कार्यक्रम का शुभारंभ गुरु वंदना से हुआ। स्वागत गीतिका महिला मंडल ने प्रस्तुत की। आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा., आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. एवं मुनि मयूखप्रभसागरजी ने प्रवचन के माध्यम से धर्मसभा को संबोधित किया। साथ ही मुमक्षु पायल बागरेचा ने भी अपने उद्गार व्यक्त किये।

मुमुक्षु पायल बागरेचा के संयम भावों के अभिनंदन पत्र का वाचन डिप्टी कमिश्नर स्टेट टैक्स कांतिलाल जैन ने किया। ओसवाल समाज अध्यक्ष मूलचंद सालेचा, श्री खरतरगच्छ संघ अध्यक्ष भंवरलाल बोकड़िया, अशोक गोलेच्छा, भीकचंद मेहता, मदन सालेचा बोस, हनुमानचंद भंसाली, शंकरलाल भंसाली, पुखराज वोहरा, मदनलाल भंसाली, केवलचंद छाजेड़, कांतिलाल ढेलड़िया सहित जैन समाज के लोगों ने मुमक्षु बहिन पायल बागरेचा का तिलक, नारियल, श्रीफल, माला एवं अभिनंदन पत्र भेंट कर बहुमान किया।

संघ पूजा के लाभार्थी भंवरलाल सोहनलाल मांगीलाल बोकड़िया, जयंतीलाल दिनेशकुमार मुकेशकुमार लुंकड़, दिलीपकुमार अमितकुमार बागरेचा रहे। संचालन कांतिलाल ढेलड़िया ने किया।

केयुप की नूतन शाखा का गठन

पू. गच्छगणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी प्रियस्मिताश्रीजी म.सा. प्रियलताश्रीजी म.सा. की निश्रा में अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् की सिलीगुड़ी (वेस्ट बंगाल) शाखा का गठन हुआ।

शाखा के गठन के पश्चात् अध्यक्ष मुकेशजी नाहटा, उपाध्यक्ष अभिषेकजी नाहटा, महामंत्री प्रशांतजी श्रीमाल को मनोनीत किया गया। संयोजक संजय नाहटा ने अथक परिश्रम किया।

साथ ही पू. महाराजश्री की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ महिला परिषद् केएमपी शाखा सिलीगुडी का भी गठन किया गया।

गुडामालानी में प्रवेश शोभायात्रा

गुडामालानी 28 जनवरी। खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवन्त श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा आदि ठाणा का गुडामालानी पधारने पर भव्य स्वागत सामैया व गाजे बाजे के साथ जैन मोहल्ले में स्थित बाडमेर भवन में प्रवेश हुआ।

नगर प्रवेश शोभायात्रा भगवानदास छाजेड़ के निवास से प्रारंभ होकर जैन मोहल्ला, सदर बाजार, चिंतामणि पार्श्वनाथ जिनालय, चौमुखा पार्श्वनाथ जिनालय होते हुए बाडमेर भवन पहुँची। जगह-जगह स्वागत तोरण द्वार लगाए गए।

बाडमेर भवन पहुँचने पर प्रवेश शोभायात्रा धर्म सभा में परिवर्तित हुई। आचार्य प्रवर ने उपस्थित जनसमुदाय को सम्बोधित करते हुए अपने प्रवचन में कहाँ कि मनुष्य को जीवन में आत्मा के मूल्य को जानना चाहिए। जीवन के चार आधार आत्मा, शरीर, परिवार, पैसा में से लोग परिवार, पैसा, शरीर के पीछे भागते है, ये तीनों ही यहाँ ही रहने वाले है। आत्मा अजर अमर हैं। इसलिए आत्मा के कल्याण के लिए धर्म, तप, जप, आराधना करके जीवन को सार्थक बनाना चाहिए। संघ की ओर से गुरुदेवश्री को कांबली ओढाकर स्वागत किया गया। पूज्य गुरुदेव दोपहर 4 बजे गुडामालानी से सिणधरी की ओर विहार किया।

-सुरेशकुमार पारख

हार्दिक श्रद्धांजलि

सांचोर हाल मुंबई निवासी सुश्राविका धर्मनिष्ठा वीरमाता श्रीमती अमरती देवी धर्मपत्नी मलूकचंदजी श्रीश्रीमाल का मौन एकादशी के दिन स्वर्गवास हो गया। वे अपने जीवनकाल में अत्यंत धर्मपरायण श्राविका थी।

शान्त स्वभावी अमरती देवी विगत दो तीन वर्षों से अस्वस्थ थी। अपनी बिमारी के दौरान भी कभी उन्होंने किसी को तकलीफ नहीं दी। परम शांति के साथ उन्होंने अपने कर्मों की निर्जरा की।

सांचोर में पू. तत्कालीन गणिवर्य श्री मणिप्रभसागरजी म.सा. की निश्रा में आज से 25 वर्ष पूर्व उनकी सुपुत्री ने दीक्षा ग्रहण की जो आज बहिन म. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी विभांजनाश्रीजी म. के नाम से संयम आराधना कर रही है।

पी. एच. शाह : मोकलसर-बेंगलुरु निवासी श्री पी. एच. शाह का स्वर्गवास हो गया। आप शासन समर्पित व्यक्तित्व के धनी थे। पिछले कुछ समय से अस्वस्थ श्री पालरेचा धार्मिक कार्यों व सामाजिक कार्यों में गहरी रुचि रखते थे। दिवंगत श्री पी.एच. शाह को जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता है।

साधु साध्वी समाचार

卐 पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. ठाणा 3 कारोला प्रतिष्ठा के पश्चात् विहार कर गुडामालाणी, सिणधरी होते हुए ता. 31 जनवरी 2020 को बालोतरा पधार गये हैं। यहाँ ता. 7 फरवरी को होने वाली दीक्षा एवं ता. 8 फरवरी को होने वाली अंजनशलाकाप्रतिष्ठास मारोहक ेअ पनीस ानिध्यता प्रदान करेंगे।

卐 पूज्य मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म. मनीषप्रभसागरजी म. समयप्रभसागरजी म. विरक्तप्रभसागरजी म. श्रेयांसप्रभसागरजी म. मलयप्रभसागरजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. सुलक्षणाश्रीजी म. की प्रेरणा से श्री गिरनार महातीर्थ से श्री सिद्धाचल महातीर्थ का छह री पालित संघ का प्रयाण ता. 31 जनवरी 2020 को हुआ है। जिसका माला विधान 14 फरवरी 2020 को होगा।

卐 पूज्य मुनि श्री मौनप्रभसागरजी म. मोक्षप्रभसागरजी म. मैत्रीप्रभसागरजी म. मननप्रभसागरजी म. आदि ठाणा पालीताना श्री जिनहरि विहार में बिराज रहे हैं।

卐 पूज्य मुनि श्री महेन्द्रसागरजी म. आदि ठाणा कैवल्यधाम में बिराज रहे हैं। वहाँ उनकी पावन निश्रा में ता. 12 फरवरी 2020 को मुमुक्षु दर्शन बागरेचा की भागवती दीक्षा संपन्न होगी।

卐 पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. महितप्रभसागरजी म. कारोला प्रतिष्ठा के पश्चात् विहार कर सांचोर पधारे। वहाँ त्रिदिवसीय स्थिरता के पश्चात् धमाना, सेवाडा होते हुए ता. 31 जनवरी2 020क ेग ंधवप धारे।व हाँस ेर ामजीक ा गोल होते हुए धोरीमन्ना पधारेंगे।

卐 पूजनीया महत्तरा पद विभूषिता श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा पालीताना जिनहरि विहार में बिराज रहे हैं। स्वास्थ्य अभी ठीक है।

卐 पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा बालोतरा पधार गये हैं। यहाँ आयोजित दीक्षा एवं प्रतिष्ठा समारोह में अपनी सानिध्यता प्रदान कर बाडमेर की ओर विहार करेंगे, जहाँ ता. 26 फरवरी को आयोजित दीक्षा एवं प्रतिष्ठा समारोह में सानिध्यता प्रदान करेंगे।

卐 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. की प्रेरणा से पालीताना के लिये छह री पालित संघ का आयोजन 31 जनवरी 2020 से प्रारंभ हुआ है।

卐 पूजनीया गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 5 कारोला प्रतिष्ठा के पश्चात् अहमदाबाद की ओर विहार कर रहे हैं। वे धानेरा, डीसा, पालनपुर, मेहसाणा होते हुए अहमदाबाद पधारेंगे।

卐 पूजनीया माताजी म. श्री रतनमालाश्रीजी म. पूजनीया बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा का बैंगलोर की ओर विहार हो रहा है। वे हुबली से गदग, हॉस्पेट, कोट्टूर, चित्रदुर्गा होते हुए ता. 30 जनवरी को हिरियुर पहुँचे।

卐 पूजनीया साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. आदि ठाणा छत्तीसगढ़ के नगरों में विचरण कर रहे हैं।

卐 पूजनीया साध्वी श्री पूर्णप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा अहमदाबाद बिराज रहे हैं।

卐 पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा सेवाडा प्रतिष्ठा व आचार्य पद समारोह के पश्चात् विहार कर झाब, धुम्बडिया, बागोडा, पादरु, सिवाना, नाकोडाजी होते हुए बालोतरा पधार गये हैं।

卐 पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा पाली पधारे हैं। वहाँ से विहार कर बालोतरा पधारेंगे।

卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. आदि ठाणा की पावन निश्रा में सम्मेतशिखरजी के लिये छह 'री' पालित संघ का आयोजन होगा। ता. 5 फरवरी 2020 को चप्पुवाडी से संघ प्रारंभ होकर ता. 9 फरवरी 2020 को सम्मेतशिखरजी पहुँचेगा।

卐 पूजनीया साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. आदि ठाणा कारोला प्रतिष्ठा के पश्चात् सांचोर, सेवाडा, गांधव, रामजी का गोल होते हुए धोरीमन्ना पधारेंगे।

卐 पूजनीया साध्वी श्री हेमरत्नाश्रीजी म. आदि ठाणा बरमसर में चातुर्मास पूर्ण कर बालोतरा, सिवाणा, नाकोडा पधारे। दि. 7-8 फरवरी को बालोतरा में होने वाले दीक्षा-प्रतिष्ठा में सानिध्यता प्रदान करेंगे।

卐 पूजनीया साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. आदि ठाणा हैदराबाद के उपनगरों में विचरण कर रहे हैं।

卐पूजनीयास ाध्वीश्र ीस ौम्यगुणाश्रीजीम .अ ादि ठाणा बाडमेर बिराज रहे हैं। उनकी निश्रा में कुशल वाटिका मुनिसुव्रतस्वामी जिन मंदिर दादावाडी की सातवीं वर्षगांठ मनाई गई।

卐 पूजनीया साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. आदि ठाणा 2 कच्छ में विहार कर रहे हैं।

卐 पूजनीया साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा चेन्नई में बिराज रहे हैं।

卐पूजनीयास ाध्वीड ॉ.न ीलांजनाश्रीजीम .अ ादि ठाणा बैंगलोर में बिराज रहे हैं। उनके हाथ में चोट आ गई थी। अभी ठीक है।

卐 पूजनीया साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा नाकोडाजी तीर्थ पर बिराजमान है।

卐 पूजनीया साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 3 सूरत में बिराज रहे हैं।

जिज्ञासा

-आचार्य जिनमणिप्रभसूरिजी म.

卐 परमात्म-प्रतिमा की पूजा करते हुए लांछन की पूजा करनी चाहिये?

- परमात्म-प्रतिमा के नव अंगों की ही पूजा का विधान है। लांछन की पूजा का कोई विधान नहीं है।

卐 फणायुक्त पार्श्वनाथ प्रभु की पूजा करते समय प्रभु की पूजा करने के बाद फणा की पूजा किस अंगुली से करना चाहिये?

- शास्त्रों में परमात्मा के नौ अंगों की पूजा का ही विधान है। फणा की पूजा का विधान ही नहीं है। प्रतिमा में फणों की स्थापना धरणेन्द्र देव की भक्ति का प्रतीक है। फणों की पूजा नहीं होती।

卐 प्रभु की प्रक्षाल पूजा करते समय दोहे मन्दस्वर में बोलने चाहिये या उच्च स्वर में।

- प्रभु का प्रक्षाल करते समय दोहे आदि मन में बोलने चाहिये। उच्चस्वर से बोलने से थूंक आदि उछलने के कारण प्रभु की आशातना होती है। मुखकोष बंधा हुआ होने पर भी थूंक आदि से आशातना संभव है। अत: दोहे मन में बोलने चाहिये तथा उन दोहों के अर्थ से अपने चित्त को भावित करना चाहिये। प्रक्षाल करते समय मूल गंभारे से बाहर खड़े श्रावक दोहे उच्चरित कर सकते हैं।

कारोला में अंजनशलाका प्रतिष्ठा संपन्न

कारोला 27 जनवरी। सांचोर के निकटवर्ती कारोला नगर में श्री नमिनाथ प्रभु के प्राचीन जिनमंदिर का आमूलचूल जीर्णोद्धार होने के पश्चात् अंजनशलाका प्रतिष्ठा का भव्य आयोजन संपन्न हुआ।

भव्य शिखरबद्ध जिनमंदिर एवं दादा श्री जिनकुशलसूरि की दादावाडी की यह प्रतिष्ठा पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. , पू. मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. पू. मुनिश्री कल्पज्ञसागरजी म., पू. मुनिश्री नयज्ञसागरजी म., पू. मुनिश्री मयूखप्रभसागरजी म., पू. मुनिश्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा 9 की निश्रा में एवं पूजनीया गणिनी पद विभूषिता श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. हर्षप्रज्ञाश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री विनीतयशा श्रीजी म. आदि ठाणा के पावन सानिध्य में 26 जनवरी 2020 रविवार को अत्यंत आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

प्रतिष्ठा समारोह का प्रारंभ ता. 22 जनवरी को पूज्यवरों के प्रवेश के साथ हुआ। ता. 25 जनवरी को भव्य शोभायात्रा संपन्न हुई। ता. 26 जनवरी को तोरण वांदने की विधि संपन्न की गई।

यह ज्ञातव्य है कि इस मंदिर के जीर्णोद्धार का शुभारंभ प्रतिमा उत्थापन के साथ पू. गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.सा. (तत्कालीन उपाध्याय) की पावन निश्रा में ता. 21 जून 2010 को हुआ था। भूमिपूजन, खनन मुहूर्त ता. 16 मई 2011 को एवं शिलान्यास विधान ता. 20 मई 2011 को पूज्य आचार्य श्री के सानिध्य में संपन्न हुआ था। त्रिशिखरी इस मंदिर में मूलनायक श्री नमिनाथ प्रभु आदि जिनबिंब, दांयी तरफ के गंभारे में दादा श्री जिनकुशलसूरिजी एवं बांयी तरफ के गंभारे में अंबिकादेवी की प्रतिमाएं प्रतिष्ठित की गई।

ता. 27 जनवरी को प्रातः द्वारोद्घाटन हुआ। तत्पश्चात् सतरह भेदी पूजा व दादा गुरुदेव की पूजा पढाई गई।

प्रतिष्ठा के उपलक्ष में पूरे गांव में रोशनी, सजावट एवं बाहर गांवों से अनेक गणमान्य व्यक्तियों का आगमन हुआ।

नाहटा खरतरगच्छ भवन का उद्घाटन संपन्न

बालोतरा 5 फरवरी। बालोतरा नगर में पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य प्रवर श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.सा., पूज्य मुनिराज श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री कल्पज्ञसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री नयज्ञसागरजी म., पूज्य मुनिराज श्री मयूखप्रभसागरजी म. की निश्रा एवं पूज्या प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पू. साध्वी विमलप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पू. साध्वी कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा, पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. आदि ठाणा, के पावन सानिध्य में श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ मू.पू. संघ द्वारा नवनिर्मित 'नाहटा खरतरगच्छ भवन' का उद्घाटन माघ सुदि 11 ता. 5 फरवरी 2020 को संपन्न हुआ।

उद्घाटन निमित्त शोभायात्रा का आयोजन किया गया। उद्घाटन का लाभ श्रीमती सुंदरदेवी घेवरचंदजी नाहटा परिवार ने लिया। इस अवसर पर पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. ने प्रवचन में फरमाया कि आराधना भवन के निर्माण का उद्देश्य हमें समझना चाहिए। इसका निर्माण साधु-साध्वियों के लिए नहीं, अपितु श्रावक-श्राविकाओं की आराधना के लिए है। आप सभी को यहां प्रतिदिन आकर सामायिक, प्रतिक्रमण, स्वाध्याय आदि आराधना करके अपनी आत्मा का कल्याण करना है। पूज्यश्री ने फरमाया- संघ और समाज में अन्तर है! संघ स्वतंत्र नहीं है। वह परमात्मा की आज्ञा से बंधा है। वह मर्यादा से बंधा है। जहां आज्ञा का पालन है, वही संघ शासन के अंतर्गत है।

इस अवसर पर संघ द्वारा मुमुक्षु रीतेश शाह रायचुर, सुश्री पायल बागरेचा बालोतरा, सुश्री पूजा संकलेचा बाडमेर, सुश्री रेखा सेठिया चोहटन, सुश्री नेहा बोथरा चोहटन का बहुमान किया गया। मुमुक्षुओं ने अपने भाव अभिव्यक्त किए। भवन के मुख्य लाभार्थी नाहटा परिवार का बहुमान किया गया। संचालन अमृतलाल कटारिया सिंघवी ने किया। उद्बोधन माणकचंद चोपडा ने दिया।

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमारजी छाजेड़ (हरसाणी-बाड़मेर) हाल इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर- इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गॉधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा
श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा- डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया

श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर- भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले-जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धांधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर
श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा- चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा- बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली

श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू- चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति,गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा- मुंबई
श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर
श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर
श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर
शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर
श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर
श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर- बैंगलोर
श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर
शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर
शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर
श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर
श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर
श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर
श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर
श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर
श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर
सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर
श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर
श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा
श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा
शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ
संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला
शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला
श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई
श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई
श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई
श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई
श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई
श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई
श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई
शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई
श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई
शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई
श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई
श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई
शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई
श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई
श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई
श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई
श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर- मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना- मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
श्री गौतमचन्दजी मीनादेवी सौरभ, सुलभ कोठारी,रायपुर (छ.ग.)
श्रीमती सुरजदेवी गुलाबचन्दजी मुणोत, रायपुर (छ.ग.)
श्री भूरमलजी नवलखा राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री संजयजी सिंघी, राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री हस्तीमलजी अभिषेक कुमार धारीवाल, बाड़मेर
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर स्कूल से लौटा था। आवेश में था। पिताजी मिल गये।

पिताजी ने पूछा- बेटा! क्या बात है! तेरी तबियत तो ठीक है ना! स्कूल से आ गये! पढाई अच्छी चल रही है ना!

जटाशंकर बोला- पिताजी! कल से मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।

पिताजी बोले- क्या हुआ बेटा! अध्यापकजी ने पिटाई की!

जटाशंकर बोला- नहीं!

पिताजी ने कहा- फिर ऐसा क्या हो गया जो तूं स्कूल जाने से मना कर रहा है।

जटाशंकर बोला- पिताजी! स्कूल में सारे अध्यापक मूर्ख है। पढे लिखे ही नहीं है। कभी क्या बोलते हैं! कभी क्या बोलते हैं!

पिताजी ने कहा- बेटा! तेरी बात समझ में नहीं आई।

जटाशंकर बोला- देखिये पिताजी! गणित की कक्षा में मास्टरजी आये। गणित पढाने लगे। उन्होंने पढाया- चार और चार आठ होते हैं। हमने अपनी कॉपी में लिख दिया।

थोडी देर बाद बोले- दस में से दो घटाने पर आठ होते हैं।

फिर बोले- पांच और तीन आठ होते हैं।

फिर बोले- सात और एक आठ होते हैं।

ये कैसे अध्यापक हैं, कभी क्या बोलते हैं? कभी क्या बोलते हैं? इनको खुद को नहीं पता। ये खुद कन्फ्यूज है। जो खुद इस प्रकार उलझनों से भरा हो, वह मुझे क्या पढायेगा! इसलिये कल से मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।

पिताजी ने जटाशंकर को समझाने की कोशिष की कि अध्यापकजी सही पढा रहे हैं। कहीं कोई उलझन नहीं है। आठ का उत्तर अलग-अलग प्रकार की गणित से आ सकता है। तुझे पढने जाना ही है। पर जटाशंकर टस से मस नहीं हुआ।

यह बात हर क्षेत्र में लागू होती है। हर उत्तर के अलग अलग विकल्प हो सकते हैं। उन सब को स्वीकार करना ही होता है। एकांगी दृष्टिकोण से जीवन नहीं जीया जा सकता।

पावन जन्म दिवस

वि. सं. 2076 फाल्गुन सुदि 14, दि. 8 मार्च 2020 को अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति पूज्यपाद आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहब का पावन जन्म दिवस है।

आपका आध्यात्मिक जीवन उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे। आपकी महती कृपा हम सभी पर अनवरत बरसती रहे।

जन्म दिवस पर अनंतशः वंदनाएँ... हृदय के पुनीत भावों की अंजलियाँ सादर समर्पित... **-जहाज मंदिर परिवार**

।। श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः ।। ।। श्री गौडी पार्श्वनाथाय नमः ।। ।। श्री महावीरस्वामिने नमः ।।

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः

खरतरबिरुदधारक आचार्य जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः

।। दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त-मणिधारी-जिनचन्द्र-जिनकुशल-जिनचन्द्रसूरिभ्यो नमः ।।

।। पू. गणनायक श्री सुखसागर-जिनहरि-जिनकान्तिसागरसूरि गुरुभ्यो नमः ।।

श्री बाड़मेर नगरे

नवनिर्मित श्री गौडी पार्श्वनाथ प्रभु

के जिनालय की

भव्यातिभव्य अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव

एवं

कुमारी पूजा संकलेचा की भागवती दीक्षा महोत्सव प्रसंगे

सकल श्री संघ को भावभरा आमंत्रण

पावन निश्रा

प.पू. गुरुदेव

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभ सूरीश्वरजी म.सा.

❁ भव्य वरघोड़ा ❁

ता. 25 फरवरी 2020

❁ प्रतिष्ठा शुभ दिवस ❁

वि. सं. 2076 फाल्गुन सुदि 3

बुधवार ता. 26 फरवरी 2020

❁ निवेदक ❁

श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छीय हाला संस्थान

ब्यावर, फालना, बाड़मेर, जयपुर, दिल्ली, बेंगलोर, मुंबई

❁ महोत्सव स्थल ❁

श्री गौडी पार्श्वनाथ जिनालय

गडरा रोड़, पो. बाड़मेर-344001 (राज.)

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

सिवाडा में उपाध्याय से आचार्य पद पर आरुढ हुए श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म.

महोत्सव लाभार्थी : **श्रीमती जमनादेवी जेठमलजी गांधी परिवार, चितलवाना–सिवाड़ा**

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408